* तृतीय अध्याय *

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से 'मैला आँचल' और 'पडघवली' की कथावस्तु का तुलनात्मक अध्ययन।

: तृतीय अध्याय :

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से 'मैला आँचल' और 'पडघवली' की कथावस्तु का तुलनात्मक अध्ययन।

3.1 उपन्यास की कथावस्तु के तत्व :-

उपन्यास में कथावस्तु का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वह उपन्यास का प्राण है। उपन्यास की कथावस्तु जीवन से संबंधित होते हुए भी उसमें कल्पना का ही आधिक्य होता है। उपन्यास की कथावस्तु में एक मुख्य कथा तथा अनेक उपकथाएँ हो सकती हैं, उसमें सुसंबंध होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, नहीं तो उपन्यास का ढाँचा सही नहीं लगेगा।

3.1.1 कथावस्तु और घटना :-

अनेक प्रकार की घटनाओं से कथावस्तु बनती है। परंतु उन घटनाओं में व्यवस्थित अन्विति होनी चाहिए नहीं तो व्यवस्था तथा अन्विति के अभाव में घटनाओं का विवरण गलत लगेगा तथा उस उपन्यास का कथानक योग्य नहीं बन पायेगा।

3.1.2 कथावस्तु की अभिव्यक्ति शैली :-

कथावस्तु के लिए उसकी अभिव्यक्ति शैली बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। किस शैली में कथावस्तु को अभिव्यक्त किये जाने पर वह अधिक प्रभावोत्पादक हो सकती है इसका सही ज्ञान लेखक को होना चाहिए तभी एक उत्तम कथावस्तु बन सकती है।

3.1.3 कथानक का चुनाव और संगठन :-

एक सफल उपन्यास बनाने के लिए उपन्यासकार के लिए कथानक का सही चुनाव अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात होती है। कथानक के सही चुनाव के साथ साथ कथानक का संगठन भी महत्त्वपूर्ण बात है। मानवजीवन के रहस्यों का अधिकाधिक उद्‌घाटन हो सके इस रूप में कथानक का संगठन होना चाहिए। इस प्रकार कथानक का चुनाव तथा उसका संगठन सफल कथानक बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण बात है।

3.1.4 कुतूहलोद्दीपन :-

पाठकों की रूचि को आरंभ से अंत तक बनाये रखना सफल कथानक का वैशिष्ट है। यदि कथानक का रहस्य उपन्यास के बीच में ही खुल जाये तो उसकी उत्सुकता धीमी पड़ पाठकों को जानने के लिए कुछ शेष नहीं रह जायेगा।

रिचार्ड चर्च का कहना है कि,

''सफल कथानक वही कहलाता है जो शुरू में ही पाठकों के औत्सुक्य को जगा दे और ज्यों ज्यों वह खुलता जाय उसकी उत्सुकता उत्तरोत्तर बढती जाय। जहाँ पात्रों की सजीवता उनके बोधगम्य होने में है वहाँ कथानक की सजीवता इसमें है कि वह पग पग पर पाठकों को आश्चर्यचकित करता जाय।''[1]

3.1.5 संभाव्यता :-

कथावस्तु में वर्णित घटनाओं पर पाठकों को संदेह नहीं होना चाहिए नहीं तो पाठक का मन उपन्यास में नहीं लगेगा। कथावस्तु में घटित हुई घटनाएँ पाठकों को संभाव्य प्रतित होनी चाहिए। तभी पाठक की बौद्धिक संतुष्टि हो जाती है। ज्यो उपन्यास की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण बात है। साथ में कथावस्तु जिस युग और प्रदेश से संबंधित है उसी की रीति नीति और विधि-निषेधों के अनुसार उपन्यास के कथानक को ढालना चाहिए। तभी वह संभाव्य प्रतीत होता है।

3.1.6 संगठितता :-

मानवजीवन में अनेक घटनाएँ घटित होती हैं जिनमें परस्पर कोई संबंध नहीं दिखाई देता तो उपन्यासकार की कुशलता इस बात में है कि वह अपने कथानक की सभी घटनाओं को ऐसी तर्क संगती से एक सूत्र में पिरोये के उनमें एक कार्यकारण शृंखला बन जाय और आरंभ से अंत तक घटनाओं का ऐसा संगठन तैयार करे कि एक शृंखलाबद्ध कथावस्तु तैयार हो जाय। इसके साथ उपन्याकसार के लिए यह भी आवश्यक है कि वह अपनी इच्छानुसार कथानक के साथ अंत में भी जबरदस्ती न करें। तथा कथावस्तु की माँग के अनुसार उपन्यास (कथानक) का अंत करें।

इसप्रकार इन सभी तत्वों के आधार पर उपन्यास की कथावस्तु सफल बन पाती है।

3.2 आँचलिक कथावस्तु के तत्त्व :-

आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु अन्य उपन्यासों की कथावस्तु की तुलना में अलग होती है। इसकी अपनी अलग एक विशेषता होती है।

3.2.1 कथागत बिखराव :-

आँचलिक उपन्यास का उद्देश्य अंचल के जीवन को उसके समग्र रूप में प्रस्तुत करना होता है। इस व्यापक उद्देश्य के कारण आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु में बिखराव होता है। कथा में एकसूत्रता तथा सुसंबद्धता नहीं दिखायी देती।

3.2.2 कथा की योजना :-

आँचलिक उपन्यास की कथा का कलेवर अत्यंत व्यापक तथा बिखरा हुआ होता है। संपूर्ण अंचल को प्रभावी तथा सशक्त रूप से उद्घाटित करने के लिए यह महत्त्वपूर्ण बात है।

3. 2.3 विशेष क्षेत्र :-

आँचलिक कथावस्तु की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि वह क्षेत्रीय कथा कहती है। इसमें लेखक एक विशिष्ट अंचल को चुन उसी के जीवन को समग्र रूप में प्रस्तुत करता है। यह जीवन सामान्य देशीय जीवन से भिन्न तथा अपने आप में विशिष्ट होता है।

3.2.4 यथार्थ चित्रण :-

आँचलिक कथावस्तु किसी एक क्षेत्र विशेष से संबंधित होती है तथा उस क्षेत्र विशेष की स्थिति एवं समस्याओं का प्रभावी ढंग से निरूपण करने के लिए यथार्थ चित्रण करना आवश्यक बात है।

3.2.5 कल्पना का स्थान :-

आँचलिक कथावस्तु में कल्पना के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। आँचलिक उपन्यासों में चित्रित यथार्थ धरातल को काल्पनिक कथानकद्वारा उद्घाटित किया जाता है। इस प्रकार आँचलिक कथावस्तु में यथार्थ एवं कल्पना को भावना की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया जाता है।

3.2.6 प्रेमतत्त्व :-

आँचलिक कथावस्तु में प्रेमतत्त्व का चित्रण विशिष्ट रूप में किया जाता है। आँचलिक जीवन प्रदर्शन तथा औपचारिकता से दूर तथा अधिक नैसर्गिक होता है, इसी कारण सहज स्वाभाविक प्रेम निरुपण के लिए आँचलिक कथावस्तु में अधिक स्थान होता है। तथा आँचलिक उपन्यासों में प्रेमकथा सामाजिक कथा से दूर अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व रखती है। इसके साथ यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि सभी आँचलिक उपन्यासों में प्रेमतत्व माधुर्यपूर्ण होता ही है ऐसी बात नहीं, भावुक कथा में यह प्रेमतत्व उभर आता है तो सामाजिक कथा में इतना महत्त्व नहीं पाता।

3.2.7 आँचलिक जीवन की समस्याएँ :-

आँचलिक कथावस्तु में क्षेत्रीय जीवन आँचलिकता निर्माण करता है परंतु उस जीवन का आधार वहाँ की समस्याएँ होती हैं। इसी कारण आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग होता है आँचलिक जीवनकी समस्याओं का उद्‌घाटन करना।

इन समस्याओं के साथ प्रगतिशीलता के तत्त्वों का भी आँचलिक कथावस्तु में समन्वय होता हैं।

3.2. 8 समाहार की विशिष्टता :-

सामान्य उपन्यासों से अलग आँचलिक उपन्यासों में समाहार की अपनी विशिष्टता होती है। सामान्य उपन्यासों में कथावस्तु अनेक अवस्थाओं से गुजरते हुए संघर्षों की समाप्ति पर सारी ग्रंथियाँ खुल एक निष्कर्ष के रूप में प्रस्थापित होती हैं। ऐसा निष्कर्ष जो कथा का उद्देश्य, शिक्षा तथा लेखक का जीवनदर्शन प्रदर्शित करता हो पर आँचलिक कथावस्तु जीवन की सतत प्रवाहमयी धारा के रूप में बहती हुई भविष्य के प्रवाह की ओर संकेत कर रूक जाती है। इसी कारण कई बार इन उपन्यासों का अंत अपूर्ण लगता है। कथावस्तु अपूर्ण लगती है। समाहार की विशिष्टता की दृष्टि से आँचलिक उपन्यासों का ऐसा भी एक वर्ग होता है जहाँ उपन्यास में कथावस्तु का अपनी चरमसीमा पर ही अंत हो, समस्या का समाधान हो, एक पूर्ण कथा का स्वाभाविक अंत हो जाता है।

इस प्रकार आँचलिक कथावस्तु की समाहार की अपनी विशेषताएँ होती हैं।

3. 3 मैला आँचल की कथावस्तु :-

'मैला आँचल' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित एक आँचलिक उपन्यास है। उपन्यास का कथानक दो भागों में विभक्त किया है। पहला खंड आजादी से पहले की कथा से संबंद्धित है दूसरा खंड आजादी के स्वागत की तैयारी एवं आजादी के बाद के कथानक से संबद्धित है। पहले की अपेक्षा दूसरा खंड छोटा है। रेणु जी ने यहाँ स्वतंत्रता आंदोलन के साथ साथ भारत स्वतंत्र हो जाने के बाद उपन्यास के पात्रोंद्वारा स्वातंत्र्योत्सव मनाये जाने का वर्णन चित्रित किया है।

'मैला आँचल' उपन्यास की कथावस्तु इस उपन्यास में स्थित गाँव मेरीगंज के नामकरण से संबंधित घटना से शुरू होती है। इस कथावस्तु में वर्णित घटनाएँ परस्पर संबंधित हैं। जिससे उपन्यास में संगती आयी है। इस उपन्यास में एक मुख्य कथा के साथ साथ अनेक गौण कथाएँ आयी हैं। जिनके साथ चलते चलते उपन्यासकार ने एक सफल कथावस्तु को कुशलता से एकसूत्र में बाँधा है।

इस उपन्यास में चित्रित अंचल बिहार राज्य के पूर्णिया जिले में 'मेरीगंज' नाम से जाना जाता है। इस गाँव का नाम पहले कुछ और था पर मार्टिन नामक एक अंग्रेज अधिकारी ने अपनी पत्नी मेरी के नाम से इस गाँव को 'मेरीगंज' बना दिया।

इस उपन्यास की कथावस्तु सारे गाँव में याने गाँव के अनेक घरों, गाँव में स्थित मठों तथा मठों में घटित घटनाओं से बनती जाती है।

गाँव में गोसाई जाति के लोग रहते हैं। इन लोगों की अपनी अपनी टोलियाँ हैं। जैसे कि यादव टोली, गुअर टोली, मालिक टोली, राजपूत टोली, कायस्थ टोली, ततमाटोली, संथाल टोली आदि। उपन्यास के शुरु में इन टोलियों के वर्णन से घटनाएँ घटित होती जाती हैं। इन लोगों का रहनसहन, आचार-विचार, उनके झगडे आदि का वर्णन है। गोसाई लोग संसारिक जीवन नहीं जीते वे मठों में रहते हैं। अपने को साधू महात्मा समझते हैं। लेकिन असल में साधू महात्मा बनना इतना आसान नहीं है, षड्विकारों पर विजय पाना इतना आसान नहीं जितना ये लोग समझते हैं। ये लोग अपने को जबरदस्ती महात्मा बनाने पर तुले होते हैं। पर कभी कभी वासनाओं का उनकी आत्मा पर,शरीर पर आक्रमण हो जाता है कि वे महात्मा के स्थान से एकदम नीचे गिर जाते हैं। वे इतना नीचे गिरते हैं कि फिर सामान्य मानव से भी निम्न स्तर पर आ जाते हैं। संतो जैसा जीवन बिताते हुए भी ये लोग अपनी सेवा के लिए दासियाँ रखते हैं, उन दासियों से मनमानी सेवा करवाते हैं जों इन लोगों को शोभा

नहीं देता। इन कथित साधूओं में स्वार्थ बडी मात्रा में होता है इसी कारण मठ का प्रमुख किसे बनाया जाय इसपर भी बहुत से झगडे ये लोग करते हैं। मठ के भंडारगृह की चाभियाँ संभालने के प्रश्न पर भी भंडारगृह की सध्यस्थित प्रमुख लक्ष्मी और इच्छुक स्त्री में हाथापायी हो जाती है तो कैसे कोई इन्हें महात्मा मानें ? इनमें से कुछ लोग साधूओं जैसा जीवन छोड गृहस्थाश्रम स्वीकार करते हैं। इस रूप में लछमी जो भंडारगृह की स्वामिनी है और बालदेव जो मठ का कार्यकर्ता है वे दोनों प्रेमी-प्रेमिका के रूप में आ जाते हैं। उसी प्रकार इन लोगों के सहयोगी कालीचरन और गाँव में चरखा सेंटर चलानेवाली स्त्री मंगला भी प्रेमी-प्रेमिका बन कथावस्तु में स्थान पाते हैं।

यह गाँव अत्यंत छोटा है, यहाँ के बहुत से लोग अनपढ हैं। यहाँ दैनंदिन व्यवहार के लिए भी बहुत दूर दूर से आना जाना पड़ता है। संपर्क के साधन भी बहुत ही सीमित हैं। फिर भी यह छोटा सा गाँव देशभक्त गाँव है। गाँधीजी का आंदोलन कितना देशव्यापी बना था इसका अंदाजा हमें इस गाँव में घटित देशभक्ति की घटनाओं से आता है। इस गाँव के लोग गांधीजी को बहुत मानते हैं। उनका सम्मान करते हैं, उनकी आज्ञा को पालना अपना प्रथम कर्तव्य मानते हैं। यहाँ के लोग गांधीजी की पुकार को स्वीकारते हुए देश आंदोलनों में कूद पडे हैं। केवल अनपढ लोग ही नहीं तो शिक्षित लोग भी जैसे तहसीलदार, विश्वनाथ प्रसाद, हरगौरी सिंह तथा उनके आसपास के लोग भी गांधीजी की राह पर चलने के लिए तत्पर हैं। इस प्रकार सारे गाँव पर देशभक्ति का मंत्र असर किये हुए हैं। इस प्रकार जब सही मायने में आंदोलन सर्वव्यापी हो तो ध्येय को पाने में कोई समय नहीं लगता यही बात यहाँ दिखायी देती है क्योंकि शिक्षित उच्चवर्ग से अनपढ़ लोगों तक आंदोलन में सर्वव्यापकता आने के कारण देश को स्वतंत्रता प्राप्त होने में देर नहीं लगी।

इस स्वतंत्रता आंदोलन तथा गाँव की मठों में होनेवाले झगडे के साथ कथावस्तु आगे चलती है। उन्हीं दिनों गाँव में प्रथम बार ही खुले हुए हेल्थ सेंटर का प्रमुख बन डॉक्टर प्रशांत आ जाता है। यह एक ध्येयवादी डाक्टर है, जो अपनी डिग्री को महज एक पैसा बनाने का साधन नहीं मानता। डिग्री प्राप्त करने के बाद अपना अस्पताल खोलने के बजाय वह इस पिछडे हुए छोटे से गाँव में आता है एक ध्येय को लेकर। उसे उन दिनों में साथियों के रोग में बडे पैमाने पर मर जानेवाले लोगों को बचाना है। उस पर अभ्यास कर कुछ ऐसा करना है जिससे लोग इन बीमारियों का शिकार न हो। और आगे कुछ ही दिनो में वह उस पर स्वतंत्र खोज कर अपने अनुसंधान को अन्य डॉक्टरों से मान्यता प्राप्त करा लेता है।

डॉक्टर प्रशांत इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। वह बडे अरमान ले, ध्येय से प्रेरित हो इस गाँव में आया है। उसे गाँव में लोगों से एकदम सहाय्यता नहीं मिलती। उसे बहुत विरोध होता है, फिर भी वह निराश

नहीं होता। वहाँ डँटे रहता है। लोग उसके टिका करण के इलाज का गलत अंदाजा लगाकर उससे झगडते हैं। उससे हैजे का इंजेक्शन नहीं लगवातें फिर भी वह अपनी कोशिशों से लोगों का विश्वास प्राप्त कर लेता है।

डॉक्टर की प्रेमिका के रूप में उस गाँव के तहसीलदार की एकमात्र संतान कमली है। वह उपन्यास के शुरूवात में एक मरीज के रूप में चित्रित हुई है। वह हिस्टेरिया की शिकार है। उसके इलाज के दौरान उसकी डॉक्टर से भेंट होती है। डॉक्टर से मिलते ही उसका हिस्टेरिया धीरे धीरे कम होने लगता है। डॉक्टरी इलाज से वह पूरी तरह से ठीक होती है और धीरे धीरे वह प्रशांत से प्यार करने लगती है। पहले तो डॉक्टर प्यार पर विश्वास नहीं करता था। उसे शरीर में दिल नाम की कोई चीज होती है इस बात पर विश्वास नहीं होता था। पर कमली से मिलकर वह दिल नाम की चीज पर विश्वास करने लगता है। कमली बहुत ही खुले स्वभाव की लड़की है। उन दोनों का प्यार बढ़ने लगता है। कमली और डॉक्टर के बढते प्यार के परिणामस्वरूप कमली शादी से पहले माँ बन जाती है। माँ बनना हर स्त्री के लिए खुशी की बात है। कमली भी बहुत खुश है। उसके माता-पिता भी खुश होते पर कब ? यदि वो प्रशांत की पत्नी होती। इस हालत में तो वे बहुत ही डर जाते हैं। उनके लिए समाज में मुँह दिखाना कठिन हो जाता है। पिता तो कमली पर बहुत गुस्सा होते हैं और उससे भी अधिक प्रशांत पर। लेकिन वे क्या कर सकते थे क्योंकि उस वक्त प्रशांत मेरीगंज गाँव में न होकर जेल में कैद होता है। प्रशांत पर गाँव का दरोगा संथालों को भडकाने का आरोप लगाता है। जिसके तहत उसे उस समय जेलखाने में भारती किया गया था। प्रशांत की गैरमौजुदगी विश्वनाथप्रसाद को पागल बना देती है। यहाँ कथावस्तु की चरमसीमा है। विश्वनाथ प्रसाद तो अपने को दुर्भागी मानने लगते हैं। उन्हें लगता है कि कमली का आँचल मैला हो गया है। उसे कौन फिर से साफ करेगा ? लेकिन कमली को विश्वास है अपने प्यार पर तथा अपने प्रशांत पर इसीलिए वह एकदम खुश तथा निश्चिंत है।

समय वह इलाज है जिससे सारी चिंताओं का दु:खों का हल निकल आता है। थोडे ही दिनों बाद प्रशांत जेल से छुट आता है। वह अपनी सहपाठी ममता को लेकर गाँव वापस आता है। आते वक्त रास्ते में उसे उसके बच्चे की खबर चिठ्ठी के द्वारा मिल जाती है। वह सीधे कमली के पास आता है। पहले तो विश्वनाथ प्रसाद गुस्सा होते हैं पर प्रशांत उनकी चरणधूली लेकर उनसे आर्शिवाद माँगता है तो वे खुश होकर उसे जमाई स्वीकार करके कमली तथा बच्चे को उसे सौंपते हैं। कमली अपने बच्चे को डॉक्टर के हाथों देकर अपने को धन्य मानती है।

दूसरे दिन ममता जब प्रशांत से पूछती है कि आगे उसका क्या इरादा है ? क्या वह शहर

आयेगा ? तो प्रशांत कहता है कि वह अब इसी गाँव में रहेगा। उसके ध्येय को इसी पिछडे हुए गाँव में रहकर पूर्ण करेगा। क्योंकि डॉक्टर को लगता था कि यह भारत देश बहुत कमजोर बन गया है। इन देहातों में अनपढ़ता, अंधश्रद्धा, पुराने रीतिरिवाज, मानवीय शोषण का इतना गहरा असर हुआ है लोगों का सर्वांगीण विकास रूक गया है। ये लोग समय के पीछे जा रहे हैं जब की सारा संसार समय के साथ आगे प्रगतिपथ पर बढ रहा है। और अपना भारत तो देहातों में ही बसा है तो इस भारत का आँचल मैला हुआ है जिसे हमें धोना चाहिए। इसी कारण प्रशांत को इसी गाँव में रहना है। वह इसी गाँव में रहकर प्यार की खेती करना चाहता है। आँसूओं से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाना चाहता है। वह भारत के लिए साधना करना चाहता है। अपना जीवन इसी कार्य को समर्पित कर भारत के मैले हुए अंचल को साफ करना चाहता है। वह कहता है, कि इस ग्रामवासिनी भारत के मैले आँचल के तले कम से कम एक ही गाँव के कुछ लोगों के मुरझाएँ होठों पर मुस्कराहट ला सके, उनमें विश्वास आशा बिठा दें तो उसका उद्देश्य सफल हुआ।

इस प्रकार यह उपन्यास का प्रमुख पात्र है जो मैले आँचल को साफ करने में अपने जीवन की सार्थकता मानता है। यहीं पर उपन्यास का अंत है।

लेखक ने इसप्रकार इस उपन्यास द्वारा मेरीगंज अंचल को उपन्यास का कथाक्षेत्र बनाकर वहाँ के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक समस्याओं को कथा तथा गौणकथाओं में पिरोकर अत्यंत कुशलता से प्रदर्शित किया है।

3.4 आँचलिकता की दृष्टि से 'मैला आँचल' की कथावस्तु :-

3.4.1 कथागत बिखराव :-

आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु सामान्य उपन्यास की कथावस्तु से बहुत अलग होती है। सामान्य उपन्यास की कथावस्तु में एक विस्तार होता है। जब कि आँचलिक उपन्यासों का उद्देश्य अंचल जीवन को उसके समग्र रूप में चित्रित करना होता है।

'मैला आँचल' की भूमिका में स्वयं फणीश्वरनाथ रेणु ने लिखा है,

''यह है मैला आँचल, एक आँचलिक उपन्यास कथानक है पूर्णिया ! पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है।''[2]

इस प्रकार आँचलिक जीवन को उसके समग्र रूप में चित्रित करने के विस्तृत उद्देश्य के कारण ऐसे उपन्यासों की कथावस्तु में बिखराव होता है। कथावस्तु में एकसूत्रता तथा सुसंबद्धता नहीं मिलती। अनेक कथाएँ एक साथ चलती हैं और जिसके संमिश्रण स्वरुप एक कथावस्तु का निर्माण होता है।

'मैला आँचल' उपन्यास की कथावस्तु का बिलकुल अपना और अलग ढंग है। इसमें केंद्रीय कथा का अभाव है। इस उपन्यास में अनेक पात्र हैं और हर पात्र से संबंधित एक अलग कथा निर्माण हुई है। इसप्रकार लघु कथा-प्रसंगो और छोटे छोटे स्थितियों के आभास द्वारा जिंदगी का अलबम तैयार किया है। इसमें देखा जाय तो डॉ. प्रशांत, कमली, बालदेव, बावनदास, लछमीदासी, तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद आदि अनेक पात्रों की कथाएँ मिलती हैं जिनका अपना अपना प्रभाव कथावस्तु पर हुआ है। आँचलिक उपन्यास का उद्देश्य आंचल को समग्रता से चित्रित करना होता है इस कारण कथावस्तु के संगठन पर उपन्यासकार का विशेष ध्यान नहीं रहता। इसकारण उपन्यास में कथागत बिखराव मिलता है। 'मैला आँचल' में भी इसी प्रकार का बिखराव है। इसमें केंद्रीय कथा नहीं है तो अनेक घटनाएँ, अनेक प्रसंग तथा अनेक पात्र आये हैं जो आपस में उलझते जाते हैं। इसी कारण उपन्यासकार एक साथ अनेक परस्पर लिपटी घटनाओं, अनेक गुंथे हुए प्रसंगों, आंतर्विरोधी मूल्यों को सूक्ष्मता तथा समर्थता से उभारने में सफल बना है। कुछ आलोचकों के विचार रेणु के उपन्यासों की कथावस्तु के संदर्भ में यहाँ उद्धृत हैं,

''मैला आँचल के लेखक ने इस विक्षुब्ध जिंदगी के ही बहुत से स्तर, बहुत से पर्त, बहुत से पहलू इस उपन्यास में प्रस्तुत किए है। और यही नहीं ये तमाम स्तर और पहलू इस प्रकार कितने ही भिन्न भिन्न दृष्टि-बिंदुओं से दिखाए गए हैं कि जीवन एक साथ कई एक सिमतों में हमारे सामने प्रस्तुत होता है, बहुत कुछ चलचित्र की भांति, समग्र होकर भी और अलग अलग भी, दूर से भी और समीप से भी।''[3]

इस तरह से इस कथावस्तु में कथागत बिखराव नजर आता है। आँचलिक उपन्यासों का प्रमुख अंचल ही होता है उसकी प्रमुखता के साथ उसकी स्वतंत्र सत्ता पात्रों की सामूहिक चरित्र सृष्टि के द्वारा निष्पन्न होती है। प्रत्येक पात्र के आँचलिक रंग की अपनी विशेषताएँ होती है, उन विशेषताओं के चलते पात्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका बनती है, फिर भी कथा की फलश्रुति और चलन के अनुसार कुछ आँचलिक उपन्यासों में सामुहिक चरित्र सृष्टि के भीतर ही किसी पात्र विशेष को प्रधानता प्राप्त होती है, इसीप्रकार 'मैला आँचल' के सभी पात्रों में डॉ. प्रशांत इस पात्र की विशेष प्रधानता प्राप्त हुई है। वह ग्रामवासिनी भारतमाता के अंचल तले आंसू से भीगी धरती पर प्यार की खेती करने का व्रत ले चुका है। उसका चरित्र त्याग, प्रेम, सहिष्णुता आदि भावों से युक्त है। अपने ध्येय

तथा कर्म से वह उपन्यास की कथावस्तु में महत्त्वपूर्ण स्थान पाता है। उसके साथ है उसकी प्रेमिका कमली। कमली का प्रेम उपन्यास की गहराई है। इस प्रकार ये उपन्यास में महत्त्वपूर्ण पात्र बने हैं।

3.4.2 विशेष आँचलिक क्षेत्र :-

आँचलिक कथावस्तु एक क्षेत्रविशेष से संबंधित होती है। उसी क्षेत्रविशेष का समग्र चित्रण कथावस्तु में होता है।

'मैला आँचल' उपन्यास की घटनाएँ बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव में ही घटित हुई हैं। मेरीगंज अंचल का ही समग्र चित्रण हुआ है। मेरीगंज से अलग किसी क्षेत्र का इससे कोई संबंध नहीं है।

3.4.3 यथार्थ चित्रण :-

आँचलिक उपन्यास किसी एक क्षेत्र विशेष से संबंधित होने के कारण उसी क्षेत्रविशेष के यथार्थ जीवन का चित्रण करना आँचलिक उपन्यासकार का उद्देश्य होता है। 'मैला आँचल' में बिहार के पूर्णियाँ जिले के मेरीगंज को समग्रता से चित्रित किया है। इसमें मेरीगंज गाँव के जिस सामाजिक अशांति का चित्रण किया है वह उस समय (1946, 47) के देशव्यापी स्वतंत्रता आंदोलन से आयी वास्तविकता थी। वह काल सामाजिक जागृति, आर्थिक समस्या, राजनीतिक उथलपुथल का था। समाज जागृति के तहत मलेरिया उन्मूलन अभियान शुरू हो गया था इसी यथार्थ के आधारपर डॉ. प्रशांत के माध्यम से सेवाधर्म, देशप्रेम, प्रगतिवादी विचार, त्याग, नये तत्त्वों की स्थापना लेखक ने की है। परकीय वस्त्रों का त्याग कर स्वदेशी वस्त्रों की महत्ता बतानेवाले चरखा सेंटर गाँव में खुल गये थे।इसी यथार्थ के आधारपर गांव के चरखा सेंटर की प्रमुख मंगला के द्वारा सूत कताई अभियान को महत्त्व दिया है। बालदेव के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति खेलावन यादव, कालीचरन, हरगौरी सिंह, तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद, रामकिरपाल सिंह, कमली आदि पात्रों के माध्यम से समाजजीवन का चित्रण किया है। लछ्मी दासी, महंत रामदास, जोतखीजी के माध्यम से समाज में स्थित धार्मिकता तथा अंधश्रद्धा का चित्रण किया है। इसके साथ टैक्टर का खेती के लिए प्रयोग एवं मिलों की स्थापना जीवन पर किस प्रकार प्रभाव डाल रही थी इसका भी उपन्यासकार ने कुशलता से समावेश कर दिया है।

3.4.4 कल्पना का स्थान :-

आँचलिक उपन्यासों का यथार्थ धरातल उस अंचल की विभिन्न समस्याएँ तथा वहाँ का लोकजीवन होता है। इन्हीं को काल्पनिक कथाओं द्वारा उद्‌घटित किया जाता है। इन आँचलिक उपन्यासों में कल्पना एवं यथार्थ को भावना की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया जाता है। इस भावनात्मक पृष्ठभूमि में प्रेमप्रसंग, लोककथाएँ, लोकगीत, त्योहार, समारोह, लोकोत्सव आदि का समावेश होता है।

गाँव में वार्षिक समारोह, त्योहार, पर्वतोत्सवों को मनाया जाता है। इस प्रसंग पर सारे ग्रामवासी सहभागी हो उनके द्वारा गीतों, वाद्यों को बजाना, पारंपारिक गीतों का गाना आदि का चित्रण अत्यंत कल्पकता से तथा रोचकता से लेखक ने चित्रित किया है।

लोकगीत तथा लोकनृत्यों में झांझ, करताल, मृदंग आदि वाद्यों का ये लोग उपयोग करते हैं। यहाँ के लोगों के लिए किर्तन, भजन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है जैसे, ''हाँ रे बडा रे जतन से सुगा एक है पोसल माखन दुधवा पिलाए।''[4]

लोकनृत्य की साल में एक बार यहाँ होड लगती है। बिदापत नाच यहाँ का लोकप्रिय नाच है। इस नृत्य में माहिर बिकटा नामक व्यक्ति बहुत मशहूर है। इस नृत्य के खास बोल होते हैं,

''तिरकट धिन्ना, तिरकट धिन्ना।

धिनक तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना

धिनक धिनक धा, धिक्, धिक् तिन्ना।''[5]

यहाँ के लोग नित्य व्यवहार में, त्योहारों पर, स्त्रियाँ आपसी छेडछाड में अक्सर लोकगीतों का इस्तमाल करती हैं। इन फगुआ गीत, भाऊजिया गीत, मैथिली गीत, होली के गीत इस प्रकार के लोकगीतों का अपना ही एक अलग रंग होता है। जिसके कारण कथावस्तु में रोचकता आयी है।

होली के त्योहार पर,

''आजु ब्रज में चहुदिश उडत गुलाल''[6] या

''ऐसी मचायो होरी हो,

कनक भवन में श्याम मचायो होरी।''[7]

फगुआ गीत, भाऊजिया गीत जैसे.

''हथवा रँगाये सैयाँ देहरी बैठाई गइले

फिरहू न लिहले उदेश रे भउजिया sss।''[8]

मैथिली लोकगीत,

''माइगे, हम ना बियाहेब अपन गौरा के

जो बुढवा होइत जमाय गे माई।''[9]

इस प्रकार के लोकगीतों ने कथावस्तु में एक विशिष्टता आ गयी है। लोकगीतों के साथ लोककथाओं को भी कथावस्तु में महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। जिसके कारण कथावस्तु में आँचलिकता उभरकर आयी है। आँचलिक उपन्यासों में कल्पना एवं यथार्थ को भावना की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया जाता है और इस भावनात्मक पृष्ठभूमि में प्रेमप्रसंगों को भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'मैला आँचल' उपन्यास में भी डॉ. प्रशांत, कमली, बालदेव- लछमी दासी, कालीचरन तथा मंगला आदि के प्रेमकथाओं को चित्रित किया है।

3.4.5 प्रेमतत्त्व :-

आँचलिक जीवन औपचारिकता एवं प्रदर्शन के तत्वों से दूर की वस्तु होता है। अधिक स्वाभाविक भी होता है। इसी कारण स्वाभाविक निश्चल प्रेम के लिए उसमें अधिक स्थान होता है। इसी कारण आचंलिक उपन्यासों में प्रेमकथा सामाजिक कथा से बहुत कुछ अलग तथा स्वतंत्र महत्त्व रखती है।

यह बात 'मैला आँचल' में स्पष्टता से दिखायी पड़ती है। इसमें डॉ. प्रशांत एवं कमली की प्रेमकथा प्रमुख प्रेमकथा है। इसके साथ उपन्यास के अन्य पात्र भी प्रेम में बाध्य हुए हैं। बालदेव एवं लछमी दासी प्रेम की मंजिल तक पहुँचते हैं। कालीचरन भी मंगलादेवी की ओर आकर्षित है। इन प्रेमकथाओं ने उपन्यास में एक

अलग स्वतंत्र स्थान रखा है।

3.4. 6 आँचलिक जीवन की समस्याएँ :-

आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग होता है आँचलिक जीवन की समस्याओं का उद्‌घाटन करना। विशिष्ट जीवन आँचलिकता निर्माण करता है और उस जीवन का आधार वहाँ की समस्याएँ होती है।

'मैला आँचल' का मेरीगंज गाँव सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक इन सभी प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। इस उपन्यास के सभी पात्र किसी न किसी समस्या से संबंधित है। मेरीगंज एक अत्यंत पिछडा हुआ देहात है। जहाँ डाक सप्ताह में एक बार आती है। गाँव में चार प्रमुख दल हैं कायस्थ, राजपूत, यादव और ब्राह्मण। इन लोगों में आपस में मेलजोल नहीं है। गाँव के अन्य जाति के लोग भी सुविधानुसार इन तीन दलों में बट चुके हैं। सारे गाँव में मेलजोल तो है ही नहीं, अपितु हमेशा आपस में इनके अंदर ही अंदर बैर पलता रहता है। व्यक्तिगत चरित्र की दृष्टि से गाँववासियों को देखा जाय तो उनमें कहीं भी नैतिकता नहीं दिखायी देती। गाँव के मठों में रहनेवाले महंत भ्रष्ट है, गांजा पिते हैं जनता के पैसों पर ऐश करते हैं, खुद की सेवा के लिए दासियाँ रखते हैं। उनसे मनमानी सेवा करवा लेना अपना अधिकार समझते हैं। हरगौरीसिंह अपनी खास मौसेरी बहिन में फसा हुआ है। कालीचरन ने चरखा सेंटर की मास्टरनी को अपने घर में रख लिया है। बालदेव जी कोठारिन लछमी दासी की ओर आकर्षित हो चुका है। डॉक्टर प्रशांत तहसीलदास विश्वनाथप्रसाद की बेटी कमली में उलझा हुआ है।तांत्रि माटोली के नोखे की स्त्री रामलगनसिंह के बेटे से फँसी हुई है और उचित दास की बेटी कोयरी टोले के सरन महतो से फँसी हुई है। शिवशंकर सिंह भी बेइज्जत हो चुके हैं। इसप्रकार इन लोगों के वर्तन में अनैतिकता बड़ी मात्रा में दिखाई पडती है।

यह गाँव हर बात में पिछडा हुआ है। इस गाँव की आर्थिक स्थिति अत्यंत खराब है। तीन चार पैसेवाले लोगों को छोड बाकी सब मजदूर या कृषक है। इस क्षेत्र के भयंकर बीमारी पर अनुसंधान करनेवाला डॉक्टर प्रशांत कहता है, ''गरीबी और जहालत इस रोग के दो कीटाणु हैं। इस क्षेत्र को गरीबी ने जकड लिया है। अंगूठे की टीप देकर वार-त्योहार मालिक लोगों से नाज आदि ले लेते हैं और फिर उसका कर्जा जिंदगी भर चुकाते रहते हैं। इस गाँव में व्याप्त गरीबी और बेबसी को बडी सजीवता के साथ रेणुने अभिव्यक्त किया है।

यहाँ इतनी गरीबी है, ऐसे इंसान हैं कि जिन्हें आमों की गुठलियों पें सूखे गूदे पर जिंदा रहना

पड़ता है। यहाँ की गरीबी और बेबसी डॉ. प्रशात के भीतर अनेक असंभवित प्रश्नों का बोझ ढोती है। एक प्रसंग देखें,

''आम से लदे हुए पेडों को देखने के पहले उसकी आँखे इन्सासन के उन टिकोलों पर पड़ती है, जिन्हें आम की गुठलियों के सूखे गूदे की रोटी पर जिंदा रहना है ----!''[10]

इसके साथ वह सोचता है, आखिर वह कौनसा कठोर विधान है जिसने हजारों- हजार क्षुधितों को अनुशासन में बाँध रखा है। कफ से जखडे हुए दोनों फेफडे, ओढने को वस्त्र नहीं, सोने को चटाई नहीं, पुआल भी नहीं ! भीगी हुई धरती पर लेटा न्युमोनिया का रोगी मरता नहीं है, जी जाता है --- कैसे ?

वहाँ के सात मासके बच्चे बथुए के साग पर पलते डॉक्टर ने देखे हैं, देह में तेल लगाना यहाँ के निवासियों के लिए विलासिता है। यहाँ का गरीब किसान और भी गरीब होता जा रहा है और अमीरों की विलासिता बढ़ रही है। इस गरीबी का कारण है बेकारी, जनसंख्या में वृद्धि, भूमि का विषम विभाजन और धनिकों द्वारा निम्न वर्ग के लोगों का शोषण। यह सच है कि इसका जिम्मेदार उच्चवर्ग है जो अपने कर्मद्वारा निम्नवर्ग का निर्माण कर रहा है। ये जमींदार लोगों की जमीन हडपने की फिक्र में हैं। छोटे छोटे किसानों की जमीनें कौडी के मोल बिक रही है। मजदूरों को सवा रूपया रोज मजदूरी मिलती है पर एक आदमी का भी पेट नहीं भरता। पाँच साल पहले सिर्फ पांच आने मजदूरी मिलती थी और उसी में घर भर के लोग खाते थे। तो इस समस्या का मूल गाँव के मुखिया की स्वार्थी प्रवृत्ति है। अनाज के उंचे दर से गांव के तीन ही व्यक्तियों ने फायदा उठाया है। तहसीलदार साहब, सिंघजी और खेलावन सिंह यादव। अपने दायित्वों के प्रति इनकी उपेक्षा के कारण जनसामान्य को यह यातनाएँ सहनी पड रही है। निम्नांकित उदा. इस पक्ष की पुष्टि करता है,

''तहसीलदार साहब ने धान तैयार होते ही न जाने कहाँ छिपा दिया है। दरवाजे पर दर्जनों बखार हैं, लेकिन इस साल सब खाली चमगादडों के अड्डे हैं ----।सरकार शायद धान जप्ती का कानून बना रही है।''[11]

सामान्यजनों की स्थिति इतनी बिकट है कि गाँव के लोग कपडों के बिना अर्धनग्न हैं। बारह साल तक के बच्चे तो नंगे ही रहते हैं। गाँव में बेरोजगारी व्यापक स्तर पर है। इन्हीं कारणों के परिणामवश मेरीगंज की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है।

सामाजिक और आर्थिक स्थिति के समान मेरीगंज की धार्मिक स्थिति भी विकारग्रस्त है।

तर्कहीन अंधविश्वासों का गाँव पर प्रभाव है। गाँव की धार्मिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र मठ है। मठ का प्रमुख सेवादास महंत है जो मठ को चलाता है जिसने अपनी सेवा के लिए मठ की कोठारिन लछमी दासी को रख लिया है उससे वह मनमानी सेवा करवाता है। इसीलिए मठ का पुराना नौकर किसनू कहता है,

''उपर बाबाजी भीतर दगाबाजी।''[12]

सेवादास के बाद रामदास को महंत बनाया जाता है। वह महंत बनने के बाद लछमी को अपनी दासी बनाना चाहता है, पर लछमी का विरोध और कालीचरन के भय से इस इरादे में असफल होने पर वह रामपियरिया को दासी बनाता है।

इसप्रकार ये लोग धर्म के नाम पर अधर्म करते हैं। मठों में अक्सर झगडे, मारपीट होती है। ये लोग गांजा पीते हैं। व्यसनों में जखडे हुए ये लोग अत्यंत सामान्य व्यवहार कर अपनी क्षुद्रता का प्रदर्शन करते हैं।

उपन्यास में अनेक अन्य अंधविश्वासों का उल्लेख भी हुआ है। तथा धार्मिक मान्यताओं को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है। जैसे की वृक्ष विशेष को पीर समझकर चीथडा चढाने का रिवाज लोगों में प्रचलित है। इसी प्रकार यह भी इन लोगों में विश्वास है कि जिन नाम का पीर 'कभी कभी मन मोहनेवाला रूप धर कर कुमारी और बेवा लडकियों को भरमाता है। कहते हैं,

''जिस पर बिगडे, बरबाद कर दे, जिस पर ढरे, उसे निहाल कर दे।''[13]

कमली के लिए डॉक्टर जिन ही है। इसी तरह कोठी के भूतहे जंगल में 'बगुले की तरह उजली प्रेतनी' रहती है। या डाइन के प्रभाव से डॉक्टर के घर में ढाई हाथ का घोड- करैत निकला था। डाइन का मंत्र ढाई अक्षरों का होता हैं। इस प्रकार के विश्वास इन लोगों को जखडे हुए हैं। यहाँ के पढे लिखे लोग जैसे तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद तक कमली की बीमारी पर कहते हैं, ''करीब एक घंटा। जोतखी जी से एक बार जंतर बनवा के दिया। झाड-फूँक भी करवाकर देखा। डाक्टर साहब, बस यही मेरा बेटा, यही मेरी बेटी----सब कुछ यही है।''[14]

इस प्रकार अंचल के जीवन का यह धार्मिक आयाम है। जिसे लेखक ने एक बाहरी रंगत के रूप में नहीं तो इस अंचल की तीव्र जीवन विसंगति के उद्‌घाटन के रूप में चित्रित किया है। यह धार्मिक आयाम बाहरी तथा भीतरी, धार्मिक और अमानवीय, त्याग और वास्तविक विलास के द्वंद्व से पीडित है।

रेणु के प्रत्येक उपन्यास में जिस प्रकार युगीन राजनीतिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उसी प्रकार 'मैला आँचल' में भी जगह जगह राष्ट्रीय धरातल पर उभर रही राजनीतिक मानसिकता को उभारा है। 1947 के आसपास भारतीय राजनीति में काँग्रेस समाजवादी, हिंदु महासभा, मुस्लीम लीग आदि राजनीतिक पक्ष थे। सत्ताधारी पक्ष काँग्रेस था। उसी प्रकार 'मैला आँचल' में भी अनेक राजनीतिक पक्ष चित्रित हुए हैं। इसके साथ शहर से देहात तक आते आते राजनीति किस प्रकार निजी स्वार्थों के लिए प्रयोग में लायी जाती है इसका चित्रण हुआ है।

बालदेव काँग्रेस का प्रशंसक है। गांधीवादी विचारों से प्रभावित तथा अपने को काँग्रेस का नेता माननेवाला अशिक्षित बालदेव बडे नेताओं की कठपुतली मात्र है। कोई निश्चित उद्देश्य उसके सामने नहीं है। केवल अहिंसावाद का उद्घोष करता रहता है। समाजवादी पक्ष का नेता है कालीचरन।वह सच्चे मन से लोगों को अपनी तरफ खींच सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व करने का प्रयास करता है किंतु पक्ष के उच्च पदस्थों के अन्याय के कारण अंतत: डाकू बन जाता है। हरगौरी सिंह जनसंघ का नेता है। इस गाँव में हिंदू महासभा के लोग भी हैं ये लोग हिंदू राज कायम करने के सपने देखते हुए अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही सीमित रहते हैं। इस प्रकार किसी नेता में देशप्रेम की भावना नहीं है। पर बावनदास सच्चा गाँधी भक्त है। वह राजनीति के विकृत स्वरूप के मूल तक पहुँच जाता है। वह कहता है , ''यह बेमारी उपर से आयी है। यह पटनियाँ रोग है। अब तो घूमधाम से फैलेगा। भूमिहार, रजपूत कैथ, जादव हरिजन सब लड रहे हैं। अगले चुनाव में लिगुना मेले चुने जायेंगे। किसका आदमी ज्यादे चुना जाये, इसी की लडाई है। यदि राजपूत पार्टी के लोग ज्यादा आये तो सबसे बड़ा मंतरी भी राजपूत होगा।''[15]

राजनीति में सबकुछ जायज है। बावनदास जैसे देशप्रेमी और गाँधीजी की राह पर अडिग व्यक्तियों को काला बाजारी के कुचक्र के नीचे कुचलकर समाप्त कर दिया जाता है।

इसके साथ रेणुने स्वातंत्र्योत्तर काल के गाँव की यथार्थ दशा का चित्रण किया है। राजनीति के अर्विभाव से गाँववालों में किस प्रकार जागृति और अपने अधिकार के प्रति सजगता, अधिकार प्राप्ति के लिए निर्माण हुई विद्रोह भावना का चित्रण किया है। स्वाधीनता की लडाई का पवित्र उत्साह और इसके साथ स्वातंत्र्योत्तर विषमताओं और मूल्यहीन स्वरों को रेणु ने अत्यंत प्रभावी रूप से चित्रित कर दोनो कालों की जाग्रत जन चेतना के विभिन्न रूपों की पहचान की है।

स्वातंत्र्योत्तर ग्रामीण परिवेश में स्वतंत्रता प्राप्ति ही वस्तुत: वहाँ की राजनीतिक चेतना का मूलोत्सव है। हमारे ग्रामीण जीवन में द्रुतगति से आये परिवर्तन तथा विज्ञान के प्रवेश ने गाँवों में नयी चेतना जग रही है। पंचायत राज्य की स्थापना स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रमुख देन है। 'मैला आँचल' में भी पंचायतों में होनेवाली धूर्तताओं का पर्दाफाश किया गया है। इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है,

''सारी पंचायत में दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जिनके ऊपर मेल मिलाप की खुशी का उल्टा असर हुआ है। खेलावन सिंह यादव को जिस चालाकी से एक किनारे किया है। इसे कोई नहीं समझ पावे, लेकिन खेलावन ने सब समझ लिया। खेलावन की चर्चा भी नहीं की सिंघ ने। और इस तहसीलदार को तो देखो, तुरंत गिरगिट की तरह रंग बदल लिया। लडाई झगडा यादव टोली से था और गले मिले तहसीलदार जी। खेलावन को सठबरसा नहीं समझना। सब चालाकी समझते हैं।''[16]

इस प्रकार पंचायत राज की स्थापना और प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए रेणुने राजनीतिक अधिकार बोध, दांव-पेच, पारस्परिक वैमनस्य, मूल्य-तनाव और जीवन संबंधों में विघटन आदि पंचायत की देन को स्पष्ट किया है।

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति में देश की अपेक्षा दलों को महत्त्वपूर्ण समझा जाता रहा है। ये दल जनता से चंदा और वोट मांगकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। लक्ष्मी कोठारिन बालदेव के चंदा मांगने के उद्देश्य को समझ जाती है और राजनीतिक फैलाव पर व्यंग करती हुई कहती है, ''गाँव में तो रोज नया सेंटर खुल रहा है- मेलेरिया सेंटर, काली टोपी सेंटर, लाल भंडार सेंटर और अब यह चरखा सेंटर।''[17] मेरीगंज राजनीतिक दलीय प्रतिबद्धता से अवगत है। अपने अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु गाँव के लोग विभिन्न घटकों से विशिष्ट आशा कर उनके नारों को स्वर देते हैं। गाँव का निम्न वर्ग लाल झंडे से प्रतिबद्ध हो रहा है और काली टोपी के संयोजक भी लाठी-भाला चलाने की शिक्षा दे रहे हैं। हरगौरीसिंह उच्च वर्ग के लोगों के हितों की सुरक्षा हेतु जनसंघ की अपेक्षा को समझाते हुए धर्म और संस्कृति का नारा लगाता है।

इस प्रकार यह मेरीगंज की स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक परिस्थिति है। यह राजनीतिक परिस्थिति मेरीगंज के लोगों को कभी विशेष लाभदायक रही ही नहीं। वैसे देखा जाय तो वह राजनीतिक समस्या ही बनी रही। फिर भी कई जगह राजनीतिक चेतना के परिणाम दिखायी पड़ते हैं। गावों के किसानों में एक जागृति आयी। यह राजनीति की स्वस्थ देन है। किसानों में अपने अधिकारों के प्रति सजगता तथा

पूंजीपतियों और जमीदारों के प्रति क्रोध व्यक्त हुआ है। इसी राजनीतिक चेतना के परिणामस्वरुप ही जमींदार के खिलाफ कालीचरन और वासुदेव की रहनुमाई से किसान मजदूर का संघटन बनता है। इसी नयी जागृति के कारण लोग जमींदारों के सामने तनकर खड़े होने लगे।

इस तरह आँचलिक जीवन की समस्याओं का उद्‌घाटन करना आँचलिक कथावस्तु का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। 'मैला आँचल' के मेरीगंज गाँव की उपर्युक्त चित्रित सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं के विश्लेषण के बाद और एक समस्याग्रस्त आँचलिक जीवन की विशेषता बाकी रहती है वह है समस्याओं के संघर्ष में प्रगतिशीलता के तत्वों का समन्वय। प्रगतीशीलता एक तो किसी आँचलिक पात्र के माध्यम से तो दूसरे किसी अनांचलिक पात्र के माध्यम से व्यक्त होती है। इस उपन्यास के दो आँचलिक पात्र गांधीवादी बालदेव और सोशालिस्ट कालिचरन यहाँ की जागृति का माध्यम बने हैं। बालदेव का गांधीजी के अहिंसा, प्रेम, शांति इन सिद्धांतों पर नितांत विश्वास है। इन्हीं सिद्धांतों का उपदेश दे वह जन नेता बना है। गाँव में मलेरिया सेंटर खुलने पर जोतखी जी तथा अन्य ब्राह्मण उसका विरोध करते हैं तो वह उस सेंटर की उपयोगिता गाँववालों को समझाकर उसकी स्थापना में पूरा सहयोग देता है। यादव-क्षत्रिय टोली का तथा सभी मजदूरों -किसानों का सच्चा नेता सोशालिस्ट कालीचरन उपन्यास का सबसे प्रगतिशील पात्र है। वह अधिकारों एवं कर्तव्यों का सजग प्रहरी बना है। भ्रष्ट रामदास को महंती का अधिकार दिलाने में वह पंचायत का विरोध करता है। पंचायत का विरोध करते हुए वह कहता है - ''आप क्या गाँव के सभी लोगों को उल्लू समझते हैं।''[18] एक बार बालदेव 'अनसन' तथा 'हिंसावाद' की चिंता किये बिना ढोंगी और भ्रष्ट नागा साधु को अच्छा सबक सिखाता है। इसी प्रकार फुलिया और सहदेव मलिक इन दोनों के बारे में पंचायत और लोगों ने किया हुआ फैसला अस्वीकार कर पंचायत और लोगों के विरोध में यह फैसला करता है कि फुलिया का चुमौना खलासी जी से हो। सोशालिस्ट विचारों से प्रभावित वह शोषण और छुआ-छुत का विरोध कर चमारों की टोली में भात खा लेता है। केवल जाग्रत व्यक्ति ही इस प्रकार के विचार रख सकता है। वह गाँव में दो ही जातियां है ऐसा मानता है। उसके विचार से जात केवल दो हैं, एक गरीब और दूसरी अमीर। चरखा सेंटर की मास्टरनी मंगला जब बीमार होती है तो वह निष्काम-सेवा कर उसे अच्छा कर देता है। गाँव में बीमारी फैलने के समय भी वह सेवा के लिए सबसे आगे आता है। गाँव में हैजा फैलाने के प्रसंग पर सुई लगाने के लिए सारा गाँव विरोध करता है तो वह गाँववालों को जबरदस्ती सुई लगवाने का प्रस्ताव रख अपने सहयोगियों द्वारा उसे कार्यान्वित भी करता है। इस प्रकार इन दो व्यक्तियों द्वारा गाँव में जागृति हो रही है।

उपन्यास के दो अनाँचलिक पात्र डॉ. प्रशांत तथा बावनदास इनके द्वारा गाँव का जाग्रत संसार

से संपर्क आया है। डॉ. प्रशांत एक शांत और निष्काम कार्यकर्ता है जिसने गाँव को मलेरिया से मुक्त करने का व्रत लिया है। वह आंसूओं सेभीगी इस धरती पर प्यार की खेती करने का आदर्श रख इसी कार्य के लिए अपना सारा जीवन समर्पित करता है। उसे इस पिछडे हुए ग्राम को उंचा उठाना है। उसे कम्युनिस्ट पक्ष का नेता मान जेल में भी डाल दिया जाता है पर वह अपने निश्चय तथा व्रत पर अटल खडा है। बावनदास गाँधीजी के आदर्श विचारों को अपने जीवन में ला उनपर बलिहारी हो जानेवाला व्यक्ति है। इस प्रकार ऐसे व्यक्तियों के संपर्क से गाँव का रूप बदल रहा है। गाँव में जागृति हो रही है।

इस प्रकार गाँव में आ रही जागृति में ही गाँव की समस्याओं का निदान भी है।

3.4.7 समाहार की विशिष्टता :-

समाहार की विशिष्ठता की दृष्टि से आँचलिक उपन्यासों का एक वर्ग और है जहाँ उपन्यास अपनी चरम सीमा पर जा समाप्त होता है। उसका एक निश्चित स्वाभाविक अंत हो कथा में पूर्णता आकर समस्या का समाधान हो जाता है। इसी प्रकार 'मैला आँचल' उपन्यास का स्वाभावक अंत हो सभी पात्रों को यथोचित फल मिल गया है। डॉ. प्रशांत ने गाँव लौटकर कमली तथा उसके बेटे को स्वीकार कर लिया है। जिससे कमली को उसका प्यार वापस मिल गया है तथा तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद और उनकी पत्नी की चिंता समाप्त हो गयी है। डॉक्टर प्रशांत आंसू से भीगी धरती पर प्यार की खेती करने गाँव वापस लौट आने के कारण कम से कम एक ही गाँव (मेरीगंज) के कुछ प्राणियों के मुरझाएँ होठों पर मुस्कराहट ला सकने तथा उन लोगों के हृदय में आशा और विश्वास प्रतिष्ठित कर सकने के उसके ध्येय को पूर्ण कर सकेगा। जिस ध्येय तथा उद्देश्य से वह इस गाँव में आया था वह अब पूर्ण कर सकेगा। इसके साथ बालदेव और लछमी ने मठ से अलग हो अपनी स्वतंत्र मढैया डाल ली है। खेलावनसिंह यादव तहसीलदार के कर्ज में अधिक ही डूब जाता है। सकलदीप अपनी नानी का सोना चुराकर थियेटर कंपनी की लैला के साथ भाग जाता है। कालीचरन तथा मंगला दोनों एकत्र हो चुके हैं। दुष्ट जोतखीजी को लकवा मार उसे अपने किये की सजा मिल गयी है।

इस प्रकार हर एक पात्र से यथोचित न्याय हो समसस्याओं का समाधान होकर कथावस्तु समाहार की दृष्टि से आँचलिकता की कसौटी पर खरी उतरती है।

इस तरह आँचलिक कथावस्तु के कथागत बिखराव, विशेष क्षेत्र, कथा की योजना, यथार्थ चित्रण, कल्पना का स्थान,प्रेमतत्व, आँचलिक जीवन की समस्याएँ तथा समाहार की विशिष्ठता आदि जो तत्त्व होते

हैं, इन तत्त्वों के आधारपर 'मैला आँचल' की कथावस्तु को परखने पर यह कथावस्तु पूर्णत: आँचलिकता का निर्वाह करती दिखायी पड़ती है।

3. 5 'पडघवली' की कथावस्तु :-

'पडघवली' कोंकण की पार्श्वभूमि पर लिखा हुआ उपन्यास है। इसमें उपन्यासकार का उद्देश्य भारत के देहातों की अवस्था चित्रित करना है। देहातों की समाज व्यवस्था बिगड चुकी है। ग्रामसंस्थाओं की समाप्ति हो गयी है। लोगों की आर्थिक व्यवस्था बिगड गयी है। लोग अपने पेट के लिए अपने पूर्वापार चलते आये उद्योग छोड शहरों की तरफ भाग रहे हैं। इसी कारण देहातों की अवस्था एकदम बिगड गयी है। वहाँ न उत्साह है न उल्हास। केवल गतदिनों को याद करते हुए एकाकी जीवन जीनेवाले वयस्क लोगों के सिवा देहातों में कोई नवयुवक नहीं दिखायी देते। देहात जहाँ भारत की संस्कृति की सच्ची झलक हम पाते हैं, उसी की हालत आज दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही है। यदि भारत की संस्कृति बनाये रखनेवाले देहात ही नहीं रहेंगे तो इसमें हमारी संस्कृति तथा देश का नुकसान है। तो आज यह जरूरत है कि हम अपनी संस्कृति का जतन करें। हमारे देहातों को उजडने से बचायें। भारत की संस्कृति बनाये रखेनवाली सच्ची नींव को मजबूत करें। यही बात लेखक ने 'पडघवली' उपन्यास के द्वारा पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में स्वयं उपन्यासकार का यह ग्राम है। इसी गाँव को उन्होंने उपन्यास का कथाक्षेत्र बनाया है। पडघवली में कुल जनसंख्या में से बारा घर ब्राह्मणों के हैं और बाकी कुलवाडी लोगों के हैं। बारा ब्राह्मणों में से मुख्य ब्राह्मण घर के मुख्य पुरूष को खोत कहा जाता है। उसी घर की दो महिला सदस्यों की बातचीत से उपन्यास की शुरूवात होती है।

पडघवली की स्थापना खोत घराने के मूलपुरूष ने की है जिसका नाम है केशवभट। इसने अपने शौर्य से पडघवली को स्थापित किया है। केशवभट को गाँव की स्थापना करते वक्त राजाश्रय मिला था। राजा ने केशवभट के शौर्य को देखते हुए उसे पूरी मदद दी और उसे यह गाँव इनाम दे दिया। आगे जाकर इसी घराने के त्र्यंबक भट और उनके बेटे राघोभट ने पडघवली में अपनी जमींदारी को फैलाया। खेतों, बागों को सींचा जिसके कारण आज महादेव भट और उनके भाई गणू भट सुख संप्पन्नता से रह रहे हैं।

उपन्यास में महादेव भट की पत्नी अंबू को मुख्य स्त्री पात्र का स्थान मिला है। इसी अंबू के मुख से उपन्यास की कथावस्तु को कथित किया गया है। उपन्यास के प्रारंभ में अंबू की बुआ उसे पडघवली के बारे में

कहती है बाद में अंबू पडघवली का कथन करती है। जिसमें बुआ(फुफेरी सांस)का उल्लेख अनेक बार आता है।

पडघवली के इस अंबू के घर के सदस्यों के साथ साथ गाँव के अन्य सदस्यों से जुडी घटनाओं से उपन्यास की कथावस्तु बनती जाती है। इसमें अनेक पात्र आयें हैं। यह पात्र जैसे अंबू, अंबू के पति महादेव भट, देवर गुजाभट, गणूभावोजी, व्यंकूभट, शारदा, शारदा के पति भिऊआबा, कुशात्या, उनका बेटा रंगू, अंबू के घराने का वफादार नौकर गेंगाण्या आदि अनेक पात्र आये हैं और हर एक से जुडी घटनाओं से एक कथा निर्माण हो उपन्यास में अनेक गौण कथाएँ आयी हैं। लेखक ने इन सब को अत्यंत कुशलता से एकसूत्र में पिरोकर एक सफल कथावस्तु का निर्माण किया है। इस प्रकार इसमें केवल एक मुख्य कथावस्तु न होकर पडघवली के हर एक व्यक्ति से जुडी घटना से कथावस्तु का निर्माण हुआ है।

अंबू खोत की पत्नी होने के कारण उसे 'खोतीण'कहते हैं। 'खोतीण'याने गाँव की मुख्य महिला और इस पद के लिए वह पूरी योग्य है। वह घर के सदस्यों से लेकर गाँव के हर एक व्यक्ति का पूरा खयाल रखती है। उनके सुख-दु:ख में उनका साथ देती है। स्त्रियों को वह उनकी अपनी लगती है। पडघवली की वयस्क स्त्रियों के लिए वह बहू है। समवयस्कों के लिए उनकी सखी है तथा छोटी स्त्रियों के लिए उनकी माँ है। अपनी हर जिम्मेदारी को वह भली भाँति समझती है। और उसे भली प्रकार निभाती है। अपने जिम्मेदार स्वभाव के कारण ही वह व्यंकूभट जो ब्राह्मणों के बारा घरों में से एक तथा रिश्ते से अंबू का देवर है, पर गाँव के लिए एक दिमक है, उसका हर बार विरोध करती है। क्योंकि व्यंकू की हर योजना गाँववासियों को नुकसान में डालनेवाली होती है। वह इतना स्वार्थी है कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए वह कौन-सी भी गिरी हुई हरकत करने में हिचकिचाता नहीं है। व्यंकूभट एक लुटेरा है। वह लोगों के खेत, पैसा यहाँ तक की स्त्रियों को भी लूटने के प्रयत्न में रहता है। इसी कारण अंबू उसके माने हुए देवर गुजाभट और अन्य गाँववालों के साथ व्यंकूभट का विरोध करती रहती है। पर महादेव भट जो अंबू के पति हैं, उन्हें व्यंकू को विरोध करने की हिम्मत नहीं है। इसी कारण वे व्यंकू के कारनामों को नजरअंदाज कर देते हैं। उन्हें अपनी पत्नी का व्यंकू की तरफ जो शत्रुत्व का नजरिया है वह मान्य नहीं है, इसी कारण कभी कभी गाँव में होनेवाले झगड़ों के लिए अंबू को जिम्मेदार मानते हुए उसे डाँटते हैं। पर अंबू उनके डाँटने की तरफ इतना ध्यान नहीं देती है, जितना की उसका ध्यान गाँव की भलाई और व्यंकू के कारस्थानों को मिटाने की तरफ है।

पडघवली में अंबू के साथ बहुत सारे लोग हैं, जिनका साथ अंबू के जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। अंबू को बुआ(फुफेरी सास)आक्की, कुशात्या, गुजाभावजी और गणूभावजी इनके साथ पडघवली के

बहुत सारे लोग शारदा, शारदा के पति भिऊआबा जैसे लोगों के प्रति उसे आत्मियता तथा प्यार रहा है। इन्हीं लोगों के कारण पडघवली जागती रही है। इनमें से हर एक व्यक्ति अपनी जिंदगी से लडा है। किसी की लडाई में जिद है तो किसी की लडाई में दु:ख, कारुण्य है। पर यह हर व्यक्ति पडघवली से जुडा है। समय के बहते बहते ये लोग पडघवली से दूर जाने लगे। कोई मृत्युवश , तो कोई समस्याओं से ग्रस्त होने के कारण। इसी कारण पडघवली रिक्त होने लगी जिसका सर्वाधिक प्रभाव अंबू के जीवन पर हुआ। अंबू की 'बुआ(फुफेरी सास)' जो अंबू के लिए माँ से बढकर थी। जिनके प्यार में वह पली बड़ी हुई वे चल बसी। अंबू के फुफेरी सासं की भाँजी अक्की जो अंबू की सखी थी वह व्यंकूभट की वक्रदृष्टि के कारण आत्महत्या कर लेती है। उन्हीं दिनों व्यंकू की चाची बेवा कुशात्या का देहांत हो जाता है। वह अंबू को अपनी बहू मानती थी तथा उन्हें अंबू से प्यार था। वह मरते वक्त भी अपने पागल बेटे रंगू की चिंता के कारण चैन से नहीं मर सकी इसका अंबू के मन को दु:ख लगा रहता है। अंबू के पडोसी भिऊआबा जो नेत्रहीन थे। उनकी पत्नी शारदा व्यंकू के जाल में फस जाती है जिसके कारण भिऊआबा आत्महत्या कर लेते हैं। इसके कारण अंबू दु:खी बन जाती है। इन्हीं दिनों उसके दु:ख की चरमसीमा हो जाती है जब उसके पति का देहांत हो जाता है। आम के दिनों में सारे गाँव के आम एकत्रित कर उन्हें व्यंकू द्वारा बेंचने के व्यंकू के कुटील कारनामें में व्यंकू से फँसाये जाने पर अंबू के पति की मानसिक दबाव में मृत्यु हो जाती है। अंबू बहुत दु:खी हो जाती है लेकिन फिर भी उसमें एक मानसिक शक्ति है जिसके बल पर वह दु:ख पर मात कर अपने आबा नामक बच्चे को लेकर फिर से डँटकर खडी रहती है। पति के देहांत बाद भी उसका गाँव की तरफ देखने का वही जिम्मेदारी का और प्यार भरा व्यवहार रहता है जो उसके पति के जिंदा रहते समय था।

महादेव भट (अंबू के पति) की मृत्यु के बाद गाँव कुछ खोया-खोया सा लगने लगता है। उसकी हालत पहले जैसी नहीं रहती। गुजाभट किसी गुरू से बंधन बंधवाकर आते हैं जिसके कारण वे लडाई-झगडा न करने का बंधन अपने पर लगवा लेते हैं। अंबू तो गुजाभट के सहयोग के कारण ही आजतक व्यंकू से लडती आयी थी। पर अब गुजाभट के व्रत के कारण उसकी पचास प्रतिशत शक्ति समाप्त हो जाती है। फिर भी वह डरती नहीं। व्यंकूभट के कारस्थान चलते ही रहते हैं, जिसके कारण गाँव दिन-ब-दिन कमजोर होने लगता है।

अंबू काम करने में तथा दूसरे के कारस्थानों पर मात करने में किसी से कम नहीं है। इसी कारण व्यंकू जब उसके बागों के पाट में केकडे छोडता है और पाट का पानी कम होने लगता है तो वह हिम्मत से गाँव के अन्य लोगों की मदत ले पाट में फिर से मिट्टी डालकर बांध भर देती है। उसका घर तो सदा अतिथियों के लिए खुला रहता है। अतिथि किसी भी समय आयें उनके लिए भोजन तथा उनकी सारी व्यवस्था वह खुद करती है। अंबू ने हमेशा लोगों से प्यार किया है। उनके सुखदु:ख में सहभागी रही है। लोगों की मदद करना चाहा है, इसी कारण

वह अपने बुआ-(फुफेरी सांस) से जडी-बूटियोंवाली दवा सीख लोगों की बीमारी में उनका इलाज करती है। दिन के किसी भी प्रहर में रोगी आयें वह उसका इलाज करने के लिए तत्पर रहती है। इसमें उसे आनंद मिलता है।

ऐसे ही एक दिन एक झगडे में व्यंकू और गुजाभट में तूतू-मैं मैं होती है उसका परिवर्तन मारपीट में होकर व्यंकूभट को इजा पहुँचती है और वे बिस्तर पकड लेते हैं। गुजाभट को नौ महिने का कारावास होता है।

दिन गुजर जाते हैं, ऐसे ही अचानक एक दिन सुलेमान नामक एक मुस्लिम व्यक्ति जो व्यंकूभट के आम बेचने के षडयंत्र में आम मुंबई ले गया था आकर व्यंकूभट ने आम बेचते वक्त किये हुए षडयंत्र को सविस्तर बताकर अंबू से माफी माँगता है, व्यंकूभट भी अब इस षडयंत्र को स्वीकार करता है। उस वक्त सारा गाँव व्यंकू को कोसता है। अंबू के दु:ख की तो सीमा नहीं रहती क्योंकि व्यंकू के कारण ही तो उसके पति की मृत्यु हुई थी। थोडे दिन बाद व्यंकू बीमारी में आत्महत्या कर लेता है और पडघवलीके एक दुष्ट शक्ति का अंत हो जाता है।

अब गाँव में कुछ भी नहीं रहा है। गाँव तो सुना हो गया है। पडघवली के बहुत से लोगों का देहांत हो चुका है। बहुत से लोग आर्थिक समस्या से गाँव छोड मुंबई चले गये हैं। दामूअण्णा के घर को ताला लगा है, अंबूनाना भी पडघवली छोडने की तैयारी में हैं। शारदा भी पति की मृत्यु के बाद पडघवली छोड चली गयी है। इस प्रकार एक समय की अमीर सुखी पडघवली अब गरीब, उध्वस्त और दु:खी बन गयी है। जिसकी साक्षीदार है अंबू। उसका मन अब इस गाँव में नहीं लगता। मुंबई में उसका बेटा आबा पढाई के लिए रहता है इसीलिए वह अपने देवर गणू भावजी को कहकर अपने बेटे के पास मुंबई जाने के लिए तैयार होती है। सारा सामान तैयार होता है। गाँव की स्त्रियाँ उसे वापस जल्दी से जल्दी आने के लिए कहती है। उनका अंबू की तरफ जो प्यार भरा व्यवहार था उसे देख अंबू सद्गदित होती है। कई बार उसे लगता भी है कि रूके। पर वह पडघवली के मोहपाश से दूर जाना चाहती है। वह देवर के साथ बंदर पर जाती है। सामान बोट में भर दिया जाता है, अब बोट चलने को तैयार ही है कि अंबू अपना इरादा बदल लेती है। उसे पडघवली से दूर जाना असंभव लगता है। उसका देवर फिर से सामान नीचे उतारता है। वह खूश है क्योंकि अब उसकी भाभी फिर से अपने घर आ रही है। अब अंबू फिर से पडघवली छोडने का विचार नहीं करेगी क्योंकि यही उसकी कर्मभूमि है। यहाँ पर वह शादी करके आयी थी। यहीं उसका जीवन फूला-फला था। अब यही उसे रहना है और यही मरना है। अपने पडघवली में। न तो वह पडघवली से दूर जा सकी न पडघवली ने उसे जाने दिया। अब उसे इसी एक आशा पर रहना है कि फिर से उध्वस्त

पडघवली स्वस्थ, चलती फिरती बनें।

इसी आशा के साथ लेखक ने उपन्यास का अंत किया है कि पडघवली फिर से पनपे। पडघवली तो केवल उपन्यास में चित्रित गाँव है लेखक को तो सारे भारत के उजड़े हुए देहातों को पनपते हुए देखना है।

3. 6 आँचलिकता की दृष्टि से पडघवली की कथावस्तु :-

3.6.1 कथागत बिखराव :-

आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु सामान्य उपन्यास की कथावस्तु से अलग होती है। सामान्य उपन्यास की कथावस्तु में एक विस्तार होता है जबकि आँचलिक उपन्यासों का उद्देश्य अंचल जीवन को समग्रता से चित्रित करना होता है।

'पडघवली' का पाठकों से परिचय कराते वक्त स्वयं दांडेकर ने लिखा है,

''पडघवली' एका नष्ट होऊ घातलेल्या खेड्याचे शब्दचित्र आहे.''[19]

(पडघवली एक नष्ट हो रहे देहात का रेखाचित्र है।)

आँचलिक जीवन को उसके समग्र रूप में चित्रित करने के विस्तृत उद्देश के कारण ऐसे उपन्यासों की कथावस्तु में बिखराव होता है। कथावस्तु में एकसूत्रता तथा सुसंबद्धता नहीं मिलती। अनेक कथाएँ एक साथ चलती हैं और जिसका संमिश्रण, एक कथावस्तु होती है।

'पडघवली' उपन्यास की कथावस्तु का अपना ही एक अलग प्रकार है। इसके बारे में स्वयं गो. नी. दांडेकर ने लिखा है, ''पडघवली हा एक अगदी नवा प्रयोग होता.''[20]

(पडघवली एक नया प्रयोग था।)

इसमें केंद्रीय कथा का अभाव है, कोई भी मुख्य कथा आदि से अंत तक नहीं चलती। गो. नी. दांडेकर ने पडघवली के बारे में कहा है,

''या कादंबरीसाठी कोणी नायक नव्हता, खरे बोलायचे, तर नायिका ही नव्हती, अंबू वहिनी ही पडघवलीची प्रतिनिधी आहे, नायिका नव्हे, नायिका असेल, तर ती स्वत: पडघवलीच आहे.''[21]

(इस उपन्यास के लिए कोई नायक नहीं था। वैसे कहा जाय तो नायिका भी नहीं थी। अंबू भाभी पडघवली की प्रतिनिधि है। नायिका नहीं। यदि कोई नायिका है तो वह खुद पडघवली ही है।)

आँचलिक उपन्यास का उद्देश्य अंचल को समग्रता से चित्रित करना होता है। इसी कारण कथावस्तु के संगठन पर उपन्यासकार का ध्यान नहीं रहता। एक विशिष्ठ अंचल कथावस्तु में चित्रित होने के कारण उस अंचल के अनेक पात्र तथा उनसे जुडी घटनाएँ उपन्यास की कथावस्तु में महत्त्वपूर्ण स्थान पाती हैं जिसके परिणाम स्वरूप कथावस्तु में बिखराव नजर आता है।

'पडघवली' में वैसे देखा जाय तो केशवभट, गेंगाण्या, बुआ(फुफेरी सास) , कुशात्या, आक्की, शारदा, गुजाभावजी, गणूभावजी व्यंकूभावजी आदि अनेक पात्र आयें हैं। तथा हर पात्र के जीवन से संबंधित एक अलग कथा निर्माण हुई है। तथा उसका कथावस्तु में अपना एक प्रभाव रहा है। इसप्रकार इसमें एक केंद्रीय कथा न होकर अनेक गौण कथाएँ एक साथ चलती हैं। अंबू की कहानी उपन्यास की मुख्य कथा है पर उसके साथ साथ वह पडघवली से जुडे हर एक व्यक्ति की कथा कथित करती जाती है। जिसके मिश्रण से एक कथावस्तु का निर्माण होता है। उपन्यासकार इन कहानियों को एकसूत्र में गुंथने में इतने सफल बनें हैं कि पाठकों के लिए यह पडघवली की अलग अलग कहानियाँ नहीं हैं जो वह एक ही कथा के एकदूसरे में गुंथे धागे हैं। फिर भी आदि से अंत तक एक ही कथा न होने के कारण इस कथावस्तु में कथागत बिखराव नजर आता है।

आँचलिक उपन्यासों का प्रमुख अंचल ही होता है उसकी प्रमुखता के साथ उसकी स्वतंत्र सत्ता पात्रों की सामूहिक चरित्र सृष्टि के द्वारा निष्पन्न होती है। प्रत्येक पात्र के आँचलिक रंग की अपनी विशेषताएँ होती हैं, उन विशेषताओं के चलते पात्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका बनती है, फिर भी कथा की फलश्रुति और चलन के अनुसार कुछ आँचलिक उपन्यासों में सामूहिक चरित्र सृष्टि के भीतर ही किसी पात्र विशेष को प्रधानता प्राप्त होती है, इसी प्रकार पडघवली के सभी पात्रों में से अंबू पात्र को विशेष प्रधानता मिली है। वह बचपन में ही ब्याह करके पडघवली में आयी है। यहीं उसका सारा जीवन व्यतित हुआ है। पडघवली की'खोतीण'होने के नाते इस पद के जिम्मेदारी को उसने भली भाँति निभाया है। पडघवली के हर सदस्य से उसे प्यार है। हर एक के सुख-दुख में वह उनके साथ रही, उनकी हर समस्या को अपना मान उसे सुलझाने में प्रयत्नशील रही। हमेशा पडघवली की प्रगति,

उन्नति के लिए संघर्ष करती रही। इसमें उसका निजी स्वार्थ कमी नहीं रहा। इसप्रकार एक जिद्दी, जीवनसंघर्ष का सामना करनेवाली, सुजान, बाहर से परंपराओं में दबी हुई फिर भी अंदर से मुक्त, मनस्वी, धैर्यवान, पडघवली के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करनेवाली स्त्री बनी अंबू उपन्यास में एक महत्त्वपूर्ण तथा प्रधान स्थान पाती है।

3.6.2 विशेष आँचलिक क्षेत्र :-

आँचलिक कथावस्तु एक विशिष्ट क्षेत्र विशेष से संबंधित होती है। उसी क्षेत्र विशेष का समग्र चित्रण कथावस्तु में होता है।

'पडघवली' उपन्यास का कथाक्षेत्र महाराष्ट्र के उत्तर कोंकण का पडघवली नामक छोटा सा ग्राम है। उपन्यास की सारी घटनाएँ पडघवली में ही घटित होती हैं। पडघवली से अलग किसी क्षेत्र का इससे कोई संबंध नहीं है।

3.6.3 यथार्थ चित्रण :-

आँचलिक उपन्यास किसी एक क्षेत्रविशेष से संबंधित होने के कारण उसी क्षेत्रविशेष के यथार्थ जीवन का चित्रण करना आँचलिक उपन्यासकार का उद्देश्य होता है। 'पडघवली' में महाराष्ट्र के उत्तर कोंकण के पडघवली अंचल को समग्रता से चित्रित किया है। 'पडघवली' उपन्यास में पडघवली जो कभी संपन्न, सुखी तथा स्वस्थ थी वह आज आर्थिक समस्या को सुलझाने के लिए मुंबई की तरफ भाग रहे लोगों के कारण उध्वस्त हो रही है इस समस्या को चित्रित किया है। 'पडघवली' में चित्रित यह समस्या तो केवल पडघवली अंचल से संबंधित रही है,पर वास्तव में देखा जाय तो यह सारे कोंकण क्षेत्र की वास्तविकता है। इसी कारण 'पडघवली' उपन्यास की भूमिका में स्वयं उपन्यासकार ने लिखा है, ''पडघवली या सर्व मरगळ आलेल्या खेड्यांची प्रतिनिधी आहे.''[22]

('पडघवली' चेतनाहीन देहातों का प्रतिनिधि है।)

इस प्रकार केवल पडघवली ही नहीं तो सारे कोंकण के देहातों की यह अवस्था है। यहाँ के लोग इस देहात में रहकर अपनी आर्थिक समस्या को सुलझा नहीं सकते तो इस समस्या का समाधान ढूँढने ये लोग अपने घर-बार,खेती, बागों को पीछे छोड मुंबई भाग रहे हैं। इनके पीछे इनके घरों को ताले लग रहे हैं। खेती, बाग सूख रहे हैं जिसके कारण ये देहात धीरे धीरे नष्ट हो रहे हैं। इसी वास्तविकता को इस उपन्यास में चित्रित करने का उपन्याकार ने प्रयास किया है।

3.6.4 कल्पना का स्थान :-

आँचलिक उपन्यासों का यथार्थ धरातल उस अंचल की विभिन्न समस्याएँ तथा वहाँ का लोकजीवन होता है। इन्हीं को काल्पनिक कथाओंद्वारा उद्घटित किया जाता है। इन आँचलिक उपन्यासों में कल्पना एवं यथार्थ को भावना की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया जाता है। इस भावनात्मक पृष्ठभूमि में प्रेमप्रसंग, लोककथाएँ, लोकगीत, त्योहार, समारोह, लोकउत्सव आदि का समावेश होता है।

इस गाँव में वार्षिक समारोह, व्रत, त्योहार, उत्सवों को मनाया जाता है। इन प्रसंगों पर सारे गाँववासी एकत्रित हो उन्हें मनाते हैं। व्रत, त्योहारों पर गाये जानेवाले गीत पडघवली का लोककाव्य ही है। किसी स्त्री की गोद भराई के प्रसंग पर अन्य स्त्रियोंद्वारा लोकगीत गायें जाते हैं जैसे,

''किती असुरानी छळिली धरणी

स्नानसंधेशी उरले ना पाणी

आदितीच्या उदरी आला बाई वामन आला बाई वामन ।''[23]

या प्रात:काली स्त्रियोंद्वारा भूपाली गाना जैसे,

''उठोनिया प्रात:काली। वदनी वदा चंद्रमौळी।

बिंदुमाधवाजवळी। स्नान करा गंगेचे ।।''[24]

गाँव के लोग आपस में मनोरंजन के लिए अंताक्षरी के तौर पर लोकगीत गाते हैं जैसे,

''पहिली माझी ओवी । पहिला माझा नेम।

तुळशीखाली राम। पोथी वाची।''[25]

''पडघवली गाव। गेंगाण्या नी राघोभट।

पाठीला दिली पाठ। बंधुराया।''[26]

इस प्रकार के लोकगीतों का गाँव में अक्सर अनेक प्रसंगों पर इस्तमाल होता है। ऐसे लोकगीतों का अपना ही एक अलग रंग होता है। जिसके कारण कथावस्तु में रोचकता आयी है। साथ में एक विशिष्ठता भी आयी है जो आँचलिक कथावस्तु के लिए महत्त्वपूर्ण है।

ऐसे लोकगीतों के साथ साथ लोक-कथाओं को भी इस कथावस्तु में महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। लोककथाएँ आम, अमला जैसे पेड़ों से संबंधित हैं, तो कहीं देवताओं से, कुलपुरूष नाग से संबंधित हैं। इसके साथ पहाडों से भी संबंधित लोककथाएँ यहाँ कही जाती हैं। इस प्रकार इन लोककथाओं के कारण पेड, पहाड, देवता आदि को एक विशेष महत्त्व तथा स्वतंत्र व्यक्तित्व प्राप्त हुआ है। जिसके कारण ये गाँव के सामूहिक जीवन का अंग बनकर रह गये हैं। ये पहाड, देवता, पेड लोगों के सपनों में आकर उन्हें सूचनाएँ देते हैं जिनका लोगोंद्वारा अनुसरण होता है। इन सब में गाँव के भावविश्व का प्रतिबिंब चित्रित होता है। साथ में पडघवली तथा पडघवली के लोगों का स्वभावदर्शन होता है। पडघवली के लोगों के लिए लोककथाओं के पेड, पहाड, देवता आदि मानव रूप ही हैं। इनके साथ इन लोगों का पुराना रिश्ता है इसी कारण ये लोग पुराने दिनों को वर्तमान में समाविष्ट करा लेते हैं। इस प्रकार भविष्य की अपेक्षा भूत और वैयक्तिक जीवन की अपेक्षा सामूहिक जीवन को महत्त्व देना पडघवली की विशेषता है।

गाँव में व्रत, त्योहार, उत्सवों के साथ साथ कीर्तन तथा नाटक भी किये जाते हैं। साधारण: साल में एक बार बाहर से कई कीर्तनकार आकर गाँव में कीर्तन कर जाते हैं। लोग बड़ी श्रद्धा तथा औत्सुक्य से इन कीर्तनों को सुनते हैं। कीर्तनकार की व्यवस्था भी बडी आत्मीयता तथा अच्छी तरह से की जाती है। सामूहिक समारोह, त्योहारों पर गाँव में नाटक खेले जाते हैं।

इसतरह लोकगीतों, लोककथाओं, नाटक, कीर्तनों के कारण उपन्यास में आँचलिकता उभर आयी है।

3.6.5 आँचलिक जीवन की समस्याएँ :-

आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग होता है आँचलिक जीवन की समस्याओं का उद्घाटन करना। विशिष्ट जीवन आँचलिकता निर्माण करता है और उस जीवन का आधार वहाँ की समस्याएँ ही होती हैं।

'पडघवली' उपन्यास का पडघवली गाँव भी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक समस्याओं से ग्रस्त है। इस उपन्यास का हर पात्र किसी न किसी समस्या से संबंधित है।

पडघवली उत्तर कोंकण का एक छोटा-सा देहात है। यहाँ कोई विशेष सुविधाएँ नहीं हैं। गाँव दो जातियों में बटाँ है। गाँव के कुल घरों में से बारा घर ब्राह्मणों के हैं, बाकी सब कुलवाडी लोगों के हैं। इन लोगों में आपस में मेलजोल तो है। पर जब उनके मतलब की बात आती है तो वे नैतिकता का विचार न करते हुए स्वार्थी बन जाते हैं।

व्यंकू अंबू का रिश्ते से देवर लगता है। वैसे तो अंबू तथा अंबू के घरवालों से उसका मेलजोल है, पर अपनी स्वार्थी प्रवृत्ती के कारण वह उन लोगों से मन ही मन में कपटवृत्ती रखता है। इसी कारण सारे गाँव के आम एकत्रित कर उन्हें व्यंकूद्वारा मुंबई बेचने के व्यंकूद्वारा किये षडयंत्र में अंबू के पति महादेव फँस जाते हैं और इसी में मानसिक दबाव के कारण उनका देहांत हो जाता है।

यही व्यंकू भट अपनी बेवा चाची कुशात्या की जायदाद हडपने के लिए कपटनीति का अवलंब कर चाची के देहांत के बाद उनके शव से चोरी छुपे, अंगूठा लगवा लेता है और गाँववालों के सामने अपने निर्दोष होने का नाटक कर कुशात्या ने उसे स्वइच्छा से जायदाद सौंपी है यह जाहिर करता है। साथ में कुशात्या का पागल बेटा रंगू को संभालने की जिम्मेदारी कुशात्या ने उस पर सौंपी है यह बताकर रंगू को अपने घर ले जाता है, जबकि कुशात्या ने अंबू के पास यह इच्छा प्रकट की थी कि अंबू ही रंगू को संभाले।तथा अंबू से बिनती भी की थी। पर व्यंकूभट रंगू को अपने घर ले जाके उसे अक्सर पिटता तथा भूखे पेट रखता है ताकि रंगू जल्दी से मरे और वह कुशात्या की जायदाद का एकमात्र मालिक बनें।

कुशात्या की जायदाद अपने नाम करवा लेते समय व्यंकू ने जिस कपटनीति का अवलंब किया था वह बात व्यंकू का नौकर तथा नौकर की पत्नी धर्मी को मालूम थी। यह बात धर्मी अंबू तथा अंबू की पडौसी सखी बनू वन्स को चुपके से बता जाती है पर यह बात जब गाँव वालों के सामने बताने का समय आता है तो धर्मी अपनी बात से मुकर जाती है। और अंबू तथा बनूवन्स को बतायी बात का विरोध कर सीधे कह जाती है,

''तां मना वो काय म्हाईत बाय ? मी तुम्हाला न्हाय वलखीत !''[27] (मुझे कुछ नहीं मालूम, मैं आपको नहीं पहचानती।)

इतना बड़ा झूठ बोलते वक्त उसे जरा भी डर नहीं लगता या अपनी अनैतिकता पर संकोच भी नहीं होता क्योंकि इसमें उसका स्वार्थ होता है । अपनी बात से मुकर जाने के लिए व्यंकूभट ने उसे सोने की माला दी थी। इसी माला के बल पर वह झूठ बोल सकी थी।

यही व्यंकू भट अंबू के बागों में आनेवाला पानी सुखने के लिए चुपके से बाग के पाटों में केकडे छोडता है। इसप्रकार के उसके षडयंत्र हमेशा चलते ही रहते हैं जिसके कारण गाँव दिन-ब-दिन कमजोर होने लगा है।

गाँव के मुस्लीम घर के हैदरचाचा का नबी नामक बेटा जो आफ्रिका में कुछ साल रह पैसा कमाकर गाँव वापस आया है वह पैसों के बलबूते अर्जुन मोरे नामक कुलवाडी के बेटों से उनके बाग खरीद लेता है। खुद के बागों को पानी लेने के लिए वह पडघवली में 'आसरांची खडक' नामक जो पहाड है उसपर बाँध लगाकर सारे गाँव का पानी रोकता है जिससे उसके बाग तो खुशहाल रहते हैं पर गाँववालों के बाग सूखने लगते हैं। इसप्रकार इसमें उसका स्वार्थ नजर आता है।

इसके साथ साथ इन लोगों के व्यक्तिगत चरित्र में भी कहीं कहीं अनैतिकता दिखायी देती है।

गाँव के अंध भिऊआबा की पत्नी शारदा व्यंकू के जाल में फँस अपने अनैतिक व्यवहार का प्रदर्शन करती है। उसके इस व्यवहार से उसके पति आत्महत्या कर लेते हैं फिर भी वह व्यंकू से अपना रिश्ता बनाये रखती है। साथ में अन्य अनेक लोगों से भी अपना रिश्ता बनाये रखती है।

यही व्यंकू अंबू के सास की भाँजी आक्की पर वक्रदृष्टि रखता है। एक बार वह आक्की पर जबरदस्ती करना चाहता है पर बात उस पर उलटने लगती है तो वह बहाना बनाकर आक्की को ही उस बात के लिए जिम्मेदार ठहराता है। जिसके परिणामवश आक्की आत्महत्या कर लेती है। इसके साथ व्यंकू गाँव के अन्य कुलवाडी स्त्रियों पर भी वक्र दृष्टि रखता है।

इसी प्रकार गाँव के अन्य एक घर के सख्या बावल्या की बेचा पत्नी अपने पति के बाद चार बच्चों समवेत गाँव में ही रहती थी। वह किसी एक व्यक्ति से रिश्ता जोड उसके बच्चे की माँ बन जाती है और वह व्यक्ति इस स्त्री को अकेला छोड मुंबई भाग जाता है।

इस प्रकार यहाँ के समाज में बहुत से जगह अनैतिकता दिखायी पड़ती है।

पडघवली की आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। जब पडघवली की स्थापना हुई तब केशवभट, राघोभट इन संस्थापकों तथा उनके बाद की पीढियों तक यहाँ संप्पन्नता थी पर धीरे धीरे आर्थिक स्थिति खराब होने लगी। आज तो पडघवली की संपन्नता पूरी तरह से समाप्त हो चुकी है। गाँव के सभी बाग उध्वस्त हो गये हैं। घरों पर उदासी छायी है। जोशी, यदोनाना, शारदा, दत्तूआण्णा, दामूआण्णा आदि लोगों के घर, बाग उध्वस्त हो गये हैं। अंबूनाना का घर भी बंद होने जा रहा है। इस तरह से आर्थिक समस्या के कारण यहाँ के लोग मुंबई तेजी से भाग रहे हैं और इनके पीछे इनके घरों के ताले लग रहे हैं तथा बाग उध्वस्त हो रहे हैं। जिसके कारण पडघवली आज पूरी तरह से गरीब, उध्वस्त हो गयी है। इसी कारण ही तो उपन्यासकार अंबू के मन में स्थित विचारों को प्रदर्शित करते हुए कहते हैं, ''मेल्यानों हीच का पडघवली ? का पडघवलीचं भूत हे ?'' इस तरह से पूरा गाँव आर्थिक समस्या से ग्रस्त हो चुका है। (यह पडघवली ही है या पडघवली का भूत ?)

सामाजिक तथा आर्थिक समस्या के साथ यहाँ की धार्मिक स्थिति भी परंपराओं में जखडी हुई है। पडघवली में अनेक धार्मिक मान्यताएँ परंपरा से चली आयी हैं। सारे पडघवली का रक्षण करने के लिए गाँव के बाहर लोणचांबा के पेड पर गिरोबा रहता है तथा यह गिरोबा गाँववासियों के संकट में उनकी मदद करता है और उनका मार्गदर्शन करने के लिए उन्हें साक्षात्कार देता है ऐसी इनकी मान्यता है। गिरोबा के साक्षात्कार पर गाँववासियों की इतनी श्रद्धा है कि वे तुंरत साक्षात्कार हुए गिरोबा की आज्ञा का पालन करते हैं। इसी कारण जब गिरोबा गुजाभावजी के सपने में आकर कुशात्या के पागल बेटे रंगू पर व्यंकूभट द्वारा हो रहे अत्याचार को रोकने के लिए कहता है तो वह तुरंत महादेव तथा व्यंकू भट की नाराजगी को नजरअंदाज कर रंगू को अपने घर लाता है और उसकी बड़ी आत्मीयता से सेवा कर उसका पागलपन दूर करता है।

इस गिरोबापर इनकी इतनी श्रद्धा है कि उससे झूठ बोलना या उससे दूर रहना उन्हें महापाप लगता है।इसी कारण अंबू की ननद दुर्गा की शादी में अचानक जोरदार बारिश हो मेहमानों की अव्यवस्था होने लगती है तो अंबू की फुफेरी सास को लगता है कि उन्होंने गिऱ्होबा को प्रसाद चढाएँ बिना शादी रची इसी कारण गिऱ्होबा उनपर नाराज हो उसके परिणाम स्वरुप यह विघ्न आया है। इसी कारण वे तुरंत गिऱ्होबा को प्रसाद चढाकर उससे माफी माँगती हैं।

यहाँ के लोगों को गिरोबा की शक्ति पर पूरा विश्वास भी है। इसी कारण मुसलिमों के आक्रमण समय केशवभट ने सोने की देवी-देवताओं की मूर्तियाँ कुएँ में फेंकी थी इस कथा को सत्य मान गुजा भट आमावस की रात उन्हें बाहर निकालने के लिए महादेव भट को साथ लेता है। तो महादेव भट डर जाता है। उस वक्त गुजा

भावजी कहता है ,

''म्हाद्या, लेका आपल्याला काय करतात भुतं ?''

''अरे आपला गिऱ्हा नाही का ?''

''तो हिंडतो चहूकडे पडघवलीच्या कुणाला येऊ देत नाही.''

''लोणचांब्याशी जाऊन गिह्याच्या पाया पडू.''[28]

(महादेव हमे क्या कर लेंगे भूतखेत ?

अरे हमारा गिरदेव नहीं है क्या ?

वह पडघवली के चारो ओर घूमता है। किसी को आने नहीं देता।

आम के पेड के पास जाकर उसके चरण छुएँगे।

इसी प्रकार जब गिऱ्होबा अंबू को साक्षात्कार देता है तो फुफेरी सास खुश होती है कि गिऱ्होबा अंबू पर प्रसन्न है तथा अंबू भी गिऱ्होबा को प्रसाद चढाकर कहती है,

''गिऱ्होबाराया, सांभाळून घे हो !''[29] (गिरोबा अपनी कृपा दृष्टि बनायें रखना) हिंदुओं के साथ गाँव के मुसलिम लोग भी इस गिऱ्होबा पर श्रद्धा रखते हैं उनके लिए यही गिऱ्होबा पीरबाबा नाम से जाना जाता है। उनका यह पीराबाबा उन्हें भी साक्षात्कार देता है तथा उसकी आज्ञा का पालन करना ये लोग अपना कर्तव्य मानते हैं।

इसी गिऱ्होबा के साथ साथ गाँव में अंबू के घराने के नौकर गेंगाण्या की मृत्यु के बाद उसके साथ उसकी पत्नियाँ भी सती गयीं तो उस जगह उनके नाम से 'सतींचे ओटे' नामक जगह बंधवायी गयी। वहाँ हररोज दिया जलाने की प्रथा है। इन सतियों पर गाँव के लोगों की अत्यंत श्रद्धा तथा ये भी साक्षात्कार देती हैं ऐसा विश्वास है। तथा यह भी कहा जाता है कि हर अमावस और पौर्णिमा को उस जगह कुमकुम तथा हल्दी आ जाती है। किसी को कोई समस्या हो तो उसके निवारण के लिए यहाँ के लोग 'सोलह सोमवार' नामक व्रत रख शिव की उपासना करते हैं। इसके समापन पर लोगों को भोजन कराया जाता है। साल में एक बार या किसी की इच्छापूर्ति पर 'सत्यनारायण' नामक पूजा करते हैं। इन प्रसंगों पर दिये जानेवाले भोजन को अत्यंत महत्त्व दिया जाता है।

कभी कभी हैसियत न होते हुए भी केवल धार्मिकतावश इन व्रतों को रखते हैं।

इस प्रकार यह अंचल जीवन का धार्मिक आयाम है इसे लेखक ने एक बाहरी रंगत के रूप में नहीं तो इस अंचल की विशिष्टता के उद्घाटन के रूप में चित्रित किया है।

इस तरह आँचलिक जीवन की समस्याओं का उद्घाटन करना आँचलिक उपन्यासों की कथावस्तु का महत्त्वपूर्ण अंग होता है। 'पडघवली' उपन्यास के पडघवली अंचल की सामाजिकता, धार्मिकता तथा आर्थिकता है। इन तीनों की अपनी अपनी समस्याएँ चित्रित हुई हैं।

3.6.6 समाहार की विशिष्टता :-

समाहार की विशिष्टता की दृष्टि से आँचलिक उपन्यासों का एक ऐसा स्थान होता है जहाँ उपन्यास अपनी चरमसीमा पर जा समाप्त होता है। उसका एक निश्चित स्वाभाविक अंत हो कथा में पूर्णता आती है तथा समस्या का समाधान हो जाता है।

'पडघवली' उपन्यास का अंत भी योग्य रीति से हो गया है। सभी पात्रों ने अपनी अपनी भूमिका योग्य रीति से निभायी है। उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र है अंबू तथा गाँव की दुष्ट शक्ति के रूप में व्यंकू भट। व्यंकूभट पडघवली के लिए एक दीमक है। अपनी पूरी जिंदगी वह षडयंत्र रचता रहा। उसकी कपटनीति के कारण पडघवली कमज़ोर बनती गयी। लेकिन अंत में उसे अपने किये का फल मिल गया। वह बीमार हो गया और उसी अस्वस्थता में उसने आत्महत्या कर ली। उसी के साथ पडघवली की दुष्ट शक्ति का अंत हो गया।

उपन्यास का प्रतिनिधी पात्र है अंबू। अंबू शादी करके पडघवली में आयी थी। उसने बचपन से पडघवली को, पडघवली के हर एक सदस्य को देखा, जाना तथा उनसे प्यार किया। उसने अपने घर के सदस्यों से लेकर गाँव के हर एक व्यक्ति के लिए निस्वार्थ भावना से कुछ न कुछ किया है। उसने हमेशा पडघवली का उत्कर्ष चाहा। तथा उसके लिए वह हमेशा कार्यरत रही। ऐसा करते वक्त उसे अनेक बार संघर्ष करना पड़ा है। उसके जीने का एकमात्र उद्देश्य पडघवली ही है। उसका सारा जीवन पडघवली तक ही सीमित रहा है। समय के बहते बहते उसके नजदीकी लोग उसका साथ छोड चले गये। गाँव के बहुत से लोग अपने जीवन व्यापन के लिए मुंबई चले गये। इन लोगों के पीछे इनके घरों को ताले लग गये। जिसके कारण गाँव , लोगों के घर, बाग धीरे धीरे नष्ट होने लगे। अंबू के लिए पडघवली की यह दशा असह्य है। वह और अधिक दिन गाँव की यह दशा नहीं देख सकती

इसीकारण वह गाँव छोड अपने बेटे आबा के पास मुंबई जाने का निर्णय लेती है। उसे लगता है कि वह पडघवली से बाहर बहुत दिन जीवित नहीं रह पायेगी। फिर भी वह अपने निर्णय पर निश्चित रह मुंबई जाने को तैयार होती है। यहाँ उपन्यास की चरमसीमा है। वह गाँव की स्त्रियों को कहती भी है कि,

''*बायानों हे शेवटच जाणं आता यायच नाही*''[30]

(*यह आखरी जाना है अब वापस आना नहीं होगा*)

मुंबई जाने का दिन आ जाता है। वह बोट में चढ जाती है कि कोई उसके पाँव वापस खींचने लगता है। उसे साक्षात्कार सा हो जाता है। वह देखने लगती है गाँव का गिऱ्होबा पडघवली का रक्षणकर्ता, ससूरजी, फुफेरी सास, उसके बुजुर्गों ने परिश्रम से स्थापित की हुई पडघवली। उसकी संप्पन्न सुखी पडघवली। और उसे लगता है कि वह क्यों मुंबई जा रही है ? और वह जा भी कैसे सकती है पडघवली को छोड। उसके पीछे उसकी पडघवली को, उसके आप्तजनों को संरक्षण तथा साथ कौन देगा ? वह अचानक तथा तत्काल अपना निर्णय बदल अपने देवर से कहती है,

''मला जायचं नाहीं'' (मुझे नहीं जाना है)

''*नाही जायचं ?*''(*नहीं जाना है ?*)

''नाही! पडघवली सोडून नाही जायच''(पडघवली छोड नहीं जाना है)[31]

यहाँ उपन्यास का अंत है। अंबू के इस निर्णय में उसकी पडघवली के प्रति निष्ठा, उसकी जिद् तथा उसके व्यक्तित्त्व का एकत्रित दर्शन हो जाता है। उसे अब इसी एक आशा पर यहाँ रहना है कि पडघवली फिर से फूलें-फलें।

इस प्रकार उपन्यास के पात्रों से यथोचित न्याय हो पात्रों ने अपनी अपनी भूमिका योग्य रीति से निभायी है। अंबू के अंतिम निर्णय से कथावस्तु का अंत योग्य रीति से हुआ है। इसमें पडघवली की समस्या का समाधान तो नहीं पर एक आशावाद जरूर दिखायी पडता है। इस तरह से कथावस्तु समाहार की दृष्टि आँचलिकता की कसौटी पर खरी उतरती है।

इसतरह से अंचलिक कथावस्तु के कथागत बिखराव, विशेष क्षेत्र, कथा की योजना, यथार्थ

चित्रण, कल्पना का स्थान, आँचलिक जीवन की समस्याएँ तथा समाहार की विशिष्टता आदि जो तत्त्व होते हैं, इन तत्त्वों को 'पडघवली' की कथावस्तु के साथ परखने पर यह कथावस्तु अंचलिकता का पूर्ण निर्वाह करती दिखायी पड़ती है।

इसमें आँचलिक कथावस्तु के तत्त्वों में से प्रेमतत्त्व को स्थान नहीं मिला है।

उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र है अंबू।बाकी बहुतसे पात्र या तो वयस्क हैं या पारंपारिक रूप से शादी किये हुए हैं। अंबू के पति हैं महादेव। यदी हम इन दोनों को ले तो भी इन दोनों का रिश्ता भी कुछ अस्पष्ट तथा अधुरासा ही लगता है। इसके कुछ कारण भी दिये जा सकते हैं। पहला तो यह है कि अंबू परंपराओं में जकडे हुए पुराने काल की स्त्री है। यह वह काल है जिस काल में पतिपत्नी का एकत्र कुटुंब में रहते एक दूसरे से संभाषण करना तक गवाँरा माना जाता था। तथा दूसरा कारण हमें उपन्यास की रचना में मिलता है। उपन्यासकार को पडघवली का सामूहिक जीवन चित्रित करना है इसकारण किसी एक रिश्ते को उस सामूहिक जीवन से अलग नहीं निकाला है। फिर भी लेखक ने उनके रिश्ते की गहराई के बारे में स्पष्टीकरण देना टाला नहीं है। इसीकारण पति की मृत्यु के पश्चात अंबू मन ही मन में कहती है,

"कुणाला वाटेल हिच नी नवऱ्यांच फारस सूत तर नव्हत मग एवढ दु:ख का ? ----सहजगत्या नही कळायच ते. सूत नव्हत हे काही खर नव्हे. कधी कधी त्यांच्या वागण्यामुळ चीडं यायची मला, पण शेवटच त्यांच बाणेदार वागणं - नि नवरा गेल्यावर काय वाटत ते उमजायला एका खात्यापित्या घरची थोरली सून व्हायला हवं ----पण हे गेल्यानं पडघवलीच कितपत नुकसान झालं? ---- हे मनान किती ही दुबळे का असेनात, तरी पडघवली या दुबळ्या खांबावर आधारली होती. तो खांब गेला नि मागं सगळ्या दावेदारांना चौखूर उधळायला मोकळीक झाली !"[32]

(लोगों को लगेगा इसकी और पति की जमती नहीं थी। फिर इतना दु:ख क्यों ? इतनी आसानी से इसका आकलन नहीं होगा। जमती नहीं थी यह बात सच नहीं है। कभी कभी उनके बरताव से मुझे गुस्सा तो आता था। लेकिन उनका आखरी वक्त का आबदार वर्तन --- और पति की मृत्यु के पश्चात क्या लगता है इसका आकलन होने के लिए एक संपन्न घर की बडी बहू होना जरूरी है। लेकिन इनके जाने से पडघवली का कितना नुकसान हुआ ? ये मन से कितने ही दुर्बल क्यों न हो, लेकिन इन दुर्बल खंबो पर पडघवली खडी थी। वह खंबा टूट गया और उनके पीछे सभी दावेदारों को उन्मुक्त बरताव के लिए छूट मिल गयी।)

इस कथन का प्रत्येक वाक्य महत्त्वपूर्ण तथा पति पत्नी के रिश्ते की गहराई अचूकता से प्रदर्शित करनेवाला है। पति के देहांत से अंबू का साथ चला गया इसकी अपेक्षा पडघवली का आधार चला गया इस बात का दु:ख अंबू को अधिक है। इसप्रकार अंबू किसी भी बात का स्वयं तक ही सीमित विचार नहीं कर सकती उसके जीवन का उद्देश्य केवल पडघवली ही है यही बात बार बार स्पष्ट होती है।

इसी विस्तृत उद्देश्य के कारण इसमें प्रेमतत्व उभरकर नहीं आया है।

निष्कर्ष :-

अंचलिक उपन्यासों का उद्देश्य अंचल जीवन को समग्रता से चित्रित करना होता है। इस विस्तृत उद्देश्य के कारण ऐसे उपन्यासों की कथावस्तु में कथागत बिखराव नजर आता है। एक साथ अनेक कथाएँ चलती हैं और उसके संमिश्रण से एक कथावस्तु का निर्माण होता है।

'मैला आँचल' तथा 'पडघवली' दोनों उपन्यासों में कथागत बिखराव नजर आता है। दोनों उपन्यासों में एक ही प्रधान पात्र न होकर अनेक पात्र चित्रित हुए हैं, और हर एक पात्र से एक अलग कथा का निर्माण हो उपन्यासों में अनेक कथाएँ एक साथ चलती रहती हैं और उसके संमिश्रण से एक पूर्ण कथावस्तु तैयार हुई है। इसीकारण इन दोनों उपन्यासों में कथागत बिखराव आया है। और कोई केंद्रीय कथा नहीं मिलती।

'मैला आँचल' तथा 'पडघवली' दोनों उपन्यास एक विशिष्ट क्षेत्रविशेष से संबंधित रहे हैं। 'मैला आँचल' मेरीगंज गाँव तथा 'पडघवली' पडघवली गाँव से ही संबंधित रहा है। इन क्षेत्रविशेषों से अलग क्षेत्रों से उपन्यासों का कोई संबंध नहीं रहा है।

अंचलिक उपन्यासों में प्रत्येक पात्र के आँचलिक रंग की अपनी विशेषताएँ होती हैं। उन विशेषताओं के चलते पात्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका बनती है फिर भी कथा की फलश्रुति और चलन के नुसार ऐसे उपन्यासों में सामुहिक चरित्र के भीतर किसी पात्र विशेष को विशेष प्रधानता मिलती है।

इसी प्रकार 'मैला आँचल' उपन्यास में 'डॉ. प्रशांत' तथा 'पडघवली' उपन्यास में 'अंबू' को विशेष प्रधानता प्राप्त हुई है।

आँचलिक उपन्यास किसी एक ही क्षेत्र विशेष से संबंधित होने के कारण वहाँ के यथार्थ जीवन

का चित्रण ऐसे उपन्यासों में होता है। 'मैला आँचल' उपन्यास में स्थित मेरीगंज गाँव की जिस सामाजिक अशांति का चित्रण किया है वह उस समय के देशव्यापी स्वतंत्रता आंदोलन से आयी वास्तविकता थी। इसके साथ उपन्यास में चित्रित सामाजिक जागृति, देशप्रेम, प्रगतिवादी विचार,विदेश की वस्त्रोंपर बहिष्कार तथा अन्य स्वतंत्रता आंदोलन उस काल की सामाजिक जागृति, आर्थिक समस्या तथा राजकीय उथलपुथल का प्रतिबिंब ही है।

इसी प्रकार 'पडघवली' उपन्यास का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य उत्तर कोंकण के किनारे स्थित 'पडघवली'की अवस्था को चित्रित करना है जो दिन-ब-दिन उध्वस्त हो रहा है। यहाँ की आर्थिक समस्या के कारण यहाँ के लोग अपने पापी पेट के लिए मुंबई जा रहे हैं तथा उनके पीछे गाँव उजाड हो रहा है। उपन्यास में चित्रित यह समस्या या विशिष्ट सामाजिक जीवन पडघवली से संबंधित रहा है पर वास्तव में देखा जाय तो यह सारे कोंकण क्षेत्र के देहातों की वास्तविकता है। इसी यथार्थ पर उपन्यास तैयार हुआ है।

आँचलिक उपन्यासों में कल्पना तथा यथार्थ को भावना की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया जाता है। इसमें प्रेमतत्व, लोककथाएँ, लोकगीत, त्योहार, समारोह आदि का समावेश होता है।

वैसे ही इन दोनों उपन्यासों में अपने अपने क्षेत्रविशेष से संबंधित लोककथाएँ, लोकगीत, त्योहार, समारंभ, उत्सव आदि का चित्रण हुआ है।

आचंलिक उपन्यासों की कथावस्तु का महत्त्वपूर्ण अंग वहाँ की समस्याओं का चित्रण करना होता है। 'मैला आँचल' तथा 'पडघवली' दोनों में अपने अपने क्षेत्रविशेष की सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। 'मैला आँचल' में राजनीतिक समस्या चित्रित हुई है। पर 'पडघवली' में इस समस्या को स्थान नहीं प्राप्त हुआ है। और 'मैला आँचल' की प्रगतिशीलता यहाँ दिखाई नहीं देती।

समाहार की विशिष्टता को दृष्टि से आँचलिक उपन्यासों में ऐसा एक स्थान है जहाँ उपन्यास अपनी चरमसीमा पर समाप्त हो उसका स्वाभाविक अंत हो जाता है तथा समस्या का समाधान हो कथा में पूर्णता आती है।

'मैला आँचल' उपन्यास में हर पात्र से यथोचित न्याय हो, समस्या का समाधान होकर कथा का योग्य प्रकार से अंत हो गया है।

'पडघवली' उपन्यास में भी सभी पात्रों ने अपनी अपनी भूमिकाएँ योग्य रीति से निभायी हैं।

अंबू के अंतिम निर्णय से कथावस्तु का अंत योग्य रीति से हुआ है। इसमे पडघवली की समस्या का योग्य समाधान तो नहीं पर एक आशावाद जरूर दिखायी देता है।

विशेष:-

आँचलिक उपन्यासों में कल्पना तथा यथार्थ को भावना की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया जाता है। इसमें प्रेमतत्त्व, लोककथाएँ, लोकगीत, समारोह, त्योंहार आदि का समावेश होता है। 'मैला आँचल' तथा 'पडघवली' में उपर्युक्त सभी तत्त्वों का चित्रण हुआ है। पर 'पडघवली' में प्रेमतत्व को स्थान नहीं मिला है। जबकि 'मैला आँचल' में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

'मैला आँचल' में मेरीगंज की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक समस्या को चित्रित किया है। परंतु 'पडघवली' उपन्यास में उपर्युक्त चार समस्याओं में से राजनीतिक समस्या को स्थान नहीं मिला है।

आँचलिक उपन्यासों में समस्याओं के संघर्ष में प्रगतिशील तत्वों का समन्वय होता है। 'मैला आँचल' में इस तत्व को स्थान प्राप्त हुआ है। 'पडघवली' में इसे स्थान तो नहीं मिला है पर अंबू यह उपन्यास का प्रतिनिधी पात्र पडघवली गाँव का विकास चाहता है।

'मैला आँचल' में उपन्यास के अंत में समस्या का जिस प्रकार समाधान हुआ है उस प्रकार का समाधान 'पडघवली' में नहीं होता। अंबू के पडघवली से बाहर न जाने के निर्णय से उपन्यास का अंत तो योग्य ढंग से हुआ है पर वह समस्या का समाधान नहीं हो सकता। फिर भी एक आशावाद जरूर दिखायी देता है कि उध्वस्त पडघवली फिर से स्वस्थ हो जाय।

: संदर्भ-सूची :

1.	गोविंद त्रिगुणायत -	'शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत,	पृष्ठ.क्र. 418
2.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	'मैला आँचल',	प्राक्कथन
3.	डॉ. अंजली तिवारी, उधृत, नेमिचन्द्र जैन,	'फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य', 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास'	पृष्ठ.क्र. 81
4.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	'मैला आँचल',	पृष्ठ.क्र. 45
5.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 76
6.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 124
7.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 127
8.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 69
9.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 56
10.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 174
11.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 117
12.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 25
13.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 242
14.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 54
15.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 290
16.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र. 32
17.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र.116
18.	फणीश्वरनाथ 'रेणु',	वही,	पृष्ठ.क्र.93
19.	गो. नी. दांडेकर,	'पडघवली',	प्राक्कथन
20.	वीणा देव,	'कादंबरीकार गो. नी. दांडेकर',	पृष्ठ.क्र. 57
21.	वीणा देव,	वही,	पृष्ठ. 58
22.	गो. नी. दांडेकर,	'पडघवली'	प्राक्कथन

23. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 10
24. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 56
25. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 59
26. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 60
27. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 133
28. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 43
29. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 64
30. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 221
31. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 222
32. गो. नी. दांडेकर, वही, पृष्ठ.क्र. 173

****